मेरी खेती

Page No. 1-24 / January 2022

MERIKHETI

नव वर्ष की
हार्दिक शुभकामनाएं

- खेत खलियान
- पशुपालन - पशुचारा
- मशीनरी
- सब्जी
- सरकारी नीतियां
- किसान समाचार
- औषधीय खेती

+91 766 8256 275
krishan@merikheti.com
www.merikheti.com

संपादकीय

उम्मीदों की खेती और किसान

खेती पर करोड़ों किसान ही नहीं हर मनुष्य, पशुकृपक्षी, कीट पतंगे और पृकृति का संतुलन टिका है। इस लिहाज से खेती नाउम्मीदी का सबब नहीं हो सकती। यह बात अलग है कि खेती में घाटा होने पर कुछ किसान नाउम्मीदी के शिकार हो काल के गाल में समा जाते हैं। गुजरे दो सालों में कोरोना महामारी की मार खेती के कई सेक्टरों पर भरपूर पड़ी लेकिन किसान ने ही देश की अर्थव्यवस्था की बागडोर संभाली। ग्रोथरेट के पैमाने पर भी खेती किसानी नहीं रुकी। घरों में कैद करोड़ों करोड़ लोगों की जरूरत की साककृभाजी, अंडे, मांस, दूध, घी, फल, दाल चावल, मेवे सबकुछ उन किसानों के परिश्रम से ही संभव हो सका। देश को कोरोना महामारी से उवारा जा चुका है लेकिन ओमीक्रोम का खतरा आगामी साल के लिए तैयार खड़ा है। इतनी प्रतिकूलताओं के बावजूद खेती के काम चालू हैं। सरकार ने विवादित कानूनों को वापस लेकर किसानों के लिए नई इबारत लिखने का वचन दिया है। इधर कई राज्यों में आसन्न चुनावों में सफलता पाने के लिए भी राजनीतिक दल किसान, किसान और किसान का राग अलापने लगे हैं। किसान आन्दोलन में सिरमौर बने किसान नेता भी आगामी चुनावों के केन्द्र में हैं। हर दल उन्हें अपने फायदे के लिए प्रयोग करने के तौर तरीकों पर काम कर रहा है।

साल 2022 खेती के लिए खास रहने वाला है। नई किस्मों की खोज सतत प्रक्रिया है लेकिन कई और परिवर्तन इस साल में खेती को देखने होंगे। तीन कानूनों की वापसी के बाद खेती को नई दिशा देने की चुनौती है। साल 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संकल्प अपनी जगह है। तीन विवादित कानून लाने के पीछे भी सरकार की कोई ठोस योजना रही होगी लेकिन कानूनों की वापसी के बाद उनमें फेरबदल तय है। उन बदलावों के बाद भी उम्मीदों के अनुरूप खेती पटरी पर लौटेगी कि नहीं कह पाना असंभव है। किसान ने कोरोना जैसी महामारी से जूझते हुए भी खेती का साथ नहीं छोड़ा। इसके चलते हमें भूख ने ज्यादा परेशान नहीं किया। आगे भी ओमेक्रोम की आहट से जूझने के लिए किसान तैयार है। किसान आम आदमी का जीवन चलाने के लिए आज भी सर्द रातों में जाग कर आवारा पशुओं से अपनी फसलों की सुरक्षा कर रहा है।

उम्मीद पर दुनियां कायम है। इसी उम्मीद में फसलों का पोषण बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक काम कर रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब आलू सेब के समान पोषण देगा। चावल से कई तरह के विटामिन भी मिल सकेंगे। अनेक रोगों से करोड़ों लोगों को बचाने का काम गेहूं जैसी फसलों की कुछ खास किस्में कर सकेंगी। किसान अपना काम कर रहा है। विज्ञान अपना और भगवान अपना काम कर रहा है। गुजरे साल सरसों जैसी तिलहनी फसलों की कीमतों में उछाल देश में खाद्य तेलों के मामले में आत्म निर्भरता की दिशा में नए रास्ते खोलने वाली है। किसानों ने इसकी फसल भरपूर लगाई है। मौसम की प्रतिकूलता ही इस उम्मीद को नाउम्मीदी में बदल सकती है। किसान अनेक संकटों के बाद भी अपनी जमीन में उम्मीद के बीज बाता है। परिणाम इच्छा के अनुरूप मिले न मिले। परिणामों में कभी कीमतें, कभी कीट एवं रोग तो कभी मौसम की मार जैसी अनेक दिक्कतें किसानों को सालती हैं। इसके बाद भी वह हिम्मत नहीं हारते। उम्मीद है कि वह नए साल के नए सवेरे में नई उम्मीद के साथ खेती को सजाएंगे कृसंवारेंगे और सरकारें उनकी मुश्किलें दूर करने का काम करेंगी।

दिलीप यादव
मेरी खेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

गन्ने की आधुनिक खेती की सम्पूर्ण जानकारी

भारत में गन्ने की खेती वैदिक काल से होती चली आ रही है। गन्ने का व्यावसायिक उपयोग होता है। इसलिये गन्ने की आधुनिक खेती को व्यावसायिक खेती कहा जाता है। गन्ने की खेत से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से एक लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ है। गन्ने की खेती के बारे में कहा जाता है कि यह सुरक्षित खेती है क्योंकि गन्ने की खेती को विषम परिस्थितियां बिलकुल प्रभावित नहीं कर पातीं हैं।

साल में दो बार की जा सकती है गन्ने की खेती: -

भारत में गन्ने की फसल के लिए बुआई साल में दो बार की जा सकती है। इन दोनों फसलों को बसंतकालीन व शरदकालीन कहा जाता है। शरदकालीन फसल के लिए गन्ने की बुआई 15 अक्टूबर तक की जाती हैजबकि बसंत कालीन गन्ने की फसल के लिए बुआई 15 फरवरी से लेकर 15 मार्च तक की जाती है। बसंत कालीन गन्ने की आधुनिक खेती के लिए बुआई धान की पछैती फसल की कटाई के बाद, तोरिया, आलू व मटर की फसलों की कटाई के बाद खाली हुए खेतों में की जा सकती है।

गन्ने की खेती से होती है बडी कमाई: -

गन्ने की खेती बहुवर्ष्षीय फसल है। एक बार बुआई करने के बाद कम से कम तीन बार फसल की कटाई की जा सकती है। यदि अच्छे प्रबंधन से खेती की जाये तो प्रतिवर्ष प्रति हेक्टेयर एक से डेढ़ लाख रुपये तक का मुनाफा कमाया जा सकता है। गन्ने की खेती से किसान भाइयों को मक्का-गेहूं, धान-गेहूं, सोयाबीन-गेहूं, दलहन-गेहूं के फसल चक्र से अधिक कमाई की जा सकती है।

गन्ने की आधुनिक खेती के लिए आवश्यक मिट्टी: -

गन्ने की फसल के लिए सबसे अच्छी मिट्टी दोमट मिट्टी होती है। इसके अलावा गन्ने की खेती को भारी दोमट मिट्टी में अच्छी फसल ली जा सकती है। गन्ने की खेती क्षारीय,अमलीय, जलजमाव वाली जमीन में नहीं की जा सकती है।

किस प्रकार करें खेती की तैयारी: -

धान, आलू, मटर, आदि फसलों से खाली हुए खेत को मिट्टी पलटने वाले हल से तीन चार बार जुताई करनी चाहिये। पुरानी फसलों के अवशेष व खरपतवार पूरी तरह से हटा देना चाहिये। बेहतर होगा कि हैरो से तीन बार जुताई करनी चाहिये। इसके बाद देशी हल से 5-6 बार जुताई करके खेत को अच्छी तरह से तैयार करना चाहिये। किसान भाइयों को इसके बाद खेत का निरीक्षण करना चाहिये यदि खेत सूखा हो तो पलेवा करना चाहिये। यह देखना

बीज कैसे तैयार करें : -

गन्ने की फसल लेने के लिए अच्छे बीज को भी तैयार करना होता है। इसके लिए खेत में अच्छी तरह से खाद डालना चाहिये। गन्ने के बीज बनाने के लिए गन्ना लेते वक्त इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि गन्ने में कोई रोग नहीं हो और जिस खेत में बुआई करने जा रहे हों तो उसी खेत का पुराना गन्ना नहीं होना चाहिये। प्रत्येक खेत के लिए नये खेत के गन्ने से बने हुए बीज का इस्तेमाल करना चाहिये।

गन्ने का केवल ऊपरी भाग यदि बीज का इस्तेमाल किया जाये तो बहुत अच्छा होता है। ऊपरी भाग की खास बात यह है कि वह जल्द ही अंकुरित होता है। गन्ने के तीन आंख वाले टुकड़ों को अलग-अलग काट लेना चाहिये। प्रति हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए इस तरह के 40 हजार टुकड़े चाहिये। बुआई करने से पहले गन्ने के बीज को कार्बनिक कवकनाशी से उपचार करना जरूरी होता है।

गन्ने की आधुनिक खेती की बुआई का तरीका : -

किसान भाइयों को बसंत कालीन फसल के लिए गन्ने के बीज की दूरी 75 सेमी रखनी होती है जबकि शरदकालीन गन्ने के लिए बीज की दूरी 90 सेमी रखनी होती है।

दोनों ही फसलों के लिए रिजन से 20 सेमी गहरी नालियां खोदी जानी चाहिये। फिर उर्वरक मिलाकर मिट्टी को नाली में डालना चाहिये। दीमक और तना छेदक कीड़े से बचाव के लिए बुआई के पांच दिन बाद ग्राम बीएचसी का 1200-1300 लीटर पानी में घोल बना. कर छिड़काव करना चाहिये। इस दवा को 50 लीटर पानी में घोलकर नालियों पर छिड़काव करके मिट्टी से बंद कर देना चाहिये।

बुआई के बाद किसान भाइयों को लगातार गन्ने की खेती की निगरानी रखनी चाहिये। यदि पायरिला का असर दिखे और उसके अंडे दिख जायें तो किसी रसायन का प्रयोग करने से पहले किसी कीट विशेषज्ञ से राय ले लें। इसके अलावा यदि खड़ी फसल में दीपक लग गया हो तो 5 लीटर गामा बीएचसी 20 ईसी का प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में सिंचाई से समय इस्तेमाल करना चाहिये।

सिंचाई प्रबंधन :-

बसंत कालीन गन्ने की खेती के लिए किसान भाइयों को विशेष रूप से सिंचाई पर ध्यान देना होता है। इस फसल के लिए कम से कम 6 बार सिंचाई करनी होती है। चार बार सिंचाई बरसात से पहले की जानी चाहिये और दो बाद सिंचाई बारिश के बाद की जानी चाहिये। तराई क्षेत्रों में तो केवल 2 या 3 सिंचाई ही पर्याप्त होती है।

खरपतवार प्रबंधन :-

गन्ने की खेती में खरपतवार नियंत्रण के प्रबंधन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बुआई के बाद एक-एक महीने के अंतर में तीन बार निराई, गुड़ाई करनी चाहिये। हालांकि गन्ने की खेती में खरपतवार के नियंत्रण के लिए बुआई के तुरन्त बाद एट्राजिन और सेंकर को एक हजार लीटर पानी में प्रतिकिलो मिलाकर छिड़काव करने से खरप. तवार नियंत्रण होता है लेकिन रसायनों के बल पर खरपतवार को पूरी तरह से नष्ट नहीं किया जा सकता है।

रोगों की रोकथाम कैसे करें:-

किसान भाइयों को चाहिये गन्ने की खेती में रोगों की रोकथाम करने के विशेष इंतजाम करने चाहिये। जानकार लोगों का मानना है कि गन्ने की खेती में रोग बीज से ही लगते हैं। इसलिये गन्ने की खेती में लगने वाले रोगों की रोकथाम के लिए इस प्रकार से इंतजाम करना चाहिये।

1. गन्ने की खेती की बुआई के लिए निरोगी, स्वस्थ और प्रमाणित बीज ही बोयें।
2. गन्ने की बुआई से पहले बीज को ट्राईकोडर्मा 10 को प्रति लीटर पानी में मिलाकर घोल बनाएं और उससे बीज को उपचारित करें।
3. बीज के लिए गन्ने को काटते समय ध्यान रखें और लाल और पीले रंग एवं गांठों की जड़ को निकाल दें। सूखे गन्ने को भी अलग कर लें।
4. यदि किसी खेत में रोग लग जाये तो गन्ने की फसल के लिए 2-3 साल तक नहीं बोनी चाहिये।

उर्वरक और खाद का प्रबंधन कैसे करें: -

गन्ने की फसल लम्बी अवधि के लिए होती है। इसलिये खेत में उर्वरक और खाद का प्रबंधन भी अच्छा करना होता है।सबसे पहले खेत की अंतिम जुताई से पूर्व सड़ी गोबर व कम्पोस्ट की 20 टन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खाद डालनी चाहिये। इस खाद को खेत की मिट्टी से अच्छी तरह मिलाना चाहिये।

बुआई से पहले 300 किलोग्राम नाइट्रोजन,, 500 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व 60 किलोग्राम पोटाश को प्रति हेक्टेयर की दर से डालनी चाहिये। एसएसपी और पोटाश की पूरी मात्रा को बुआई करनी चाहिये। लेकिन नाइट्रोजन की पूरी मात्रा को तीन हिस्सों में समान रूप से बांटना चाहिये। किसान भाइयों को चाहिये कि नाइट्रोजन को बुआई के बाद 30 दिन बाद, 90 दिन के बाद और चार महीने के बाद खेत में सिंचाई करने से पहले डालना चाहिये।नाइट्रोजन के साथ नीम की खली भी मिलाकर खेत में डालने से किसान भाइयों को गन्ने की फसल में लगने वाले दीमक से भी सुरक्षा मिल सकती है। इसके अलावा बुआई के समय खेत में जिंक व आयरन की कमी को पूरा करने के लिए 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट तथा 50 किलोग्राम फेरस सल्फेट 3 वर्ष के अंतर से डालना चाहिये।

गन्ने को गिरने से बचाने के उपाय करने चाहिये: -

गन्ने की लाइनों की दिशा पूर्व तथा पश्चिम की ओर रखें। गन्ने की गहरी बुआई करें। पौधा जब डेढ़ मीटर का हो जाये तब दो बार उसकी जड़ों में मिट्टी चढ़ाएं। गन्ने की बंधाई करें। यह बंधाई पत्ते से की जानी चाहिये लेकिन सारी पत्तियां एक जगह पर इकट्ठा न हों।

पालक की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

पालक का नाम सुनते ही हमारे जेहन में एक हरे और चौड़े पत्ते वाली सब्जी आती है. जो की सर्दियों में हरा साग बना के खाई जाती है. पालक की सब्जी लोह और दूसरे विटामिन्स का बहुत अच्छा स्रोत है. इससे कैंसर-रोधक और ऐंटी ऐजिंग दवाइयां भी बनाई जाती है. इसके बहुत सारे अन्य फायदे भी हैं. यह हमारे पाचन, बाल, त्वचा आदि में भी बहुत महत्वपूर्ण है. अक्सर डॉक्टर्स हमें हरी सब्जी खाने की सलाह देते हैं इसके पीछे कारण यह है की इन हरी सब्जियों से हमें बहुत सारे विटामिन्स एंड मिनरल्स मिलते हैं जिससे की हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है.

मिटटी: -

पालक के लिए दोमट एवं मिक्स बलुई मिटटी उपयुक्त रहती है. इसको मिटटी से मिलने वाले पोषक तत्व अगर सही से मिलें तो इसके पत्ते चौड़े और चमकदार होते है. पत्ते देख कर भी कोई बता सकता है की पालक को मिटटी से मिलने वाले पोषक तत्व कैसे हैं. कहने का तात्पर्य है की चमकदार हरा रंग और चौड़े पत्ते भरपूर पोषक तत्वों का सूचक है.

खेत की तैयारी: -

पालक के लिए खेत की तैयारी करते समय ध्यान रहे की इसके खेत की जुताई अच्छे तरीके से कि जाये. खेत में खरपतवार न हो तथा खेत समतल होना चाहिए जिससे की उसमें पानी भरने कि संभावना न हो. इससे पालक कि फसल खराब न हो. पालक की फसल कच्ची फसल होती है यह ज्यादा पानी भरने पर गल जाती है. खेत की अंतिम जुताई करने से पहले अच्छे से गोबर का बना हुआ खाद मिला देना चाहिए. इससे रासायनिक खाद की ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती है. पालक की खेती के साथ-साथ इसको सर्दियों में पशुओ को भी खिलाते हैं. क्योकि यह लोह और विटामिन्स का बहुत अच्छा स्रोत है. इसलिए पशुओं के लिए बोने वाले चारे में पालक और मेथी मिला देते हैं. इससे पशुओं को भरपूर विटामिन्स मिलते हैं तथा सर्दियों में उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है.

बुवाई: -

पालक के बीज की बुवाई या तो मशीन के द्वारा कराइ जानी चाहिए या फिर किसी विशेषज्ञ किसान द्वारा पवेर के करनी चाहिए. इसके पौधों में एक निश्चित दूरी रखनी चाहिए. जिससे की पौधे को फैलने की पर्याप्त जगह मिले.

पालक की उन्नत किस्में: -

पालक की खेती इसकी पत्तियों के लिए की जाती है. इसकी पट्टी जीतनी चमकदार और हरी, चौड़ी होंगी उतनी ही अच्छी फसल मणि जाती है. इसकी फसल से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए क्षेत्र विशेष की जलवायु व भूमि के अनुसार किस्मों का चयन करना भी एक आवश्यक कदम है। साथ ही पालक की सफल खेती के लिए चयनित किस्मों की विशेषताओं का भी ध्यान रखना चाहिए। पालक की खेती के लिए कुछ निम्नलिखित किस्मों में से किसी एक किस्म का चयन कर किसान अपनी आय को बढ़ा सकते हैं- ऑलग्रीन, पूसा ज्योति, पूसा हरित, पालक नं. 51-16, वर्जीनिया सेवोय, अर्ली स्मूथ लीफ आदि।

पालक की फसल के रोगें: -

जैसा की हम पहले बता चुके हैं कि पालक की फसल कच्ची फसल होती है तो इसमें रोग भी जल्दी ही लगते हैं. इसके रोग कीड़े के रूप में और अन्य बीमारी भी इसमें जल्दी लगाती हैं. जैसे

चेंपा:- चेंपा रोग इसमें बहुत जल्दी लगता है. तथा इसके छोटे छोटे कीड़े पत्ती पर बैठ कर उसका रास चूस लेते हैं जिससे कि इसकी पत्तियां मुरझा जाती है. इसके इलाज के लिए अगर आप देसी इलाज देना चाहते हैं तो नीम कि पत्ती का घोल और उपले की राख बखेर देनी चाहिए. चिट्टेदार पत्तेरू इस रोग में पालक के पत्ते पर लाल रंग का घेरा जैसा बन जाता है. उससे पत्तियां खराब होने लगती हैं जिससे ये बाजार में बेचने लायक नहीं होता है.

मोजेक वायरस:- यह वायरस लगभग 150 विभिन्न प्रकार की सब्जियों और पौधों को संक्रमित कर सकता है। हम पत्तियों के उतरे हुए रंग को देखकर इसकी पहचान कर सकते हैं। संक्रमित पत्तियों में पीले और सफेद धब्बे होते हैं। पौधों का आकार बढ़ना बंद हो जाता है और वे धीरे-धीरे मर जाते हैं।

कोमल फफूंदी:- यह बीमारी पेरोनोस्पोरा फेरिनोसा रोगाणु के कारण होती है। हम पत्तियों को देखकर इसकी पहचान कर सकते हैं। वे अक्सर मुड़ी हुई होती हैं और उसमें फफूंदी और काले धब्बे लगे होते हैं।

स्पिनच ब्लाइट:- यह वायरस पत्तियों को प्रभावित करता है। संक्रमित पत्तियां बढ़ना बंद कर देती हैं और उनका रंग पीलापन लिए हुए भूरे रंग का होने लगता है।

पत्तागोभी की खेती की सम्पूर्ण जानकारी

जो किसान भाई पत्ता गोभी यानी बंद गोभी की खेती करना चाहते हैं, वे खेती की अन्य सभी तैयारियों के साथ कीट व रोग प्रबंधन के लिये विशेष रूप से कमर कस लें। नकदी फसल की सब्जी की यह खेती बहुत लाभकारी है लेकिन इसमें कीट व्याधियां इतनी अधिक लगतीं हैं कि उनके लिए प्रत्येक पल सतर्क रहना होता है। जरा सी चूक पर फसल के खराब होने में देरी नहीं लगती है। पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में होने वाली पत्ता गोभी का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बाजार में कीमत घटने के समय खेत में रोक भी सकते हैं, महंगी होने पर काट कर बेच भी सकते हैं। पत्ता गोभी का सबसे अधिक उपयोग सब्जी बनाने में होता है। इसके अलावा सलाद, कढ़ी, अचार, स्ट्रीट फूड, पाव भाजी, आदि चाट आइटम बनाने के भी काम में लाया जाता है। पत्ता गोभी में 1.8 प्रतिशत प्रोटीन,0.1 प्रतिशत वसा, 4.6 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन के साथ बिटामिन ए व विटामिन बी-1, विटामिन बी-2 तथा विटामिन सी पाया जाता है। पत्ता गोभी पेट के रोगों के साथ शुगर डाइबिटीज में लाभदायक होता है। आइए जानते हैं इसकी खेती के बारे में।

मिट्टी व जलवायु: -

पत्ता गोभी की खेती वैसे तो सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है लेकिन जल निकास वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है।
पत्ता गोभी की खेती के लिये सामान्य जलवायु की जरूरत होती है। अधिक सर्दी और पाले से पत्तागोभी को नुकसान हो सकता है। गांठों के विकास के समय 20 डिग्री के आसपास तापमान होना चाहिये। वर्षा के समय तापमान घटने से पत्ता गोभी की गांठ अच्छी तरह से विकसित नहीं हो पाती है और स्वाद भी खराब हो जाता है।

खेत की तैयारी कैसे करें: -

किसान भाइयों को चाहिये कि जलनिकासी वाले खेत में सबसे पहले हैरों आदि से खेत की मिट्टी को पलटवा दें जिससे पूर्व की फसल के अवशेष और खरपतवार उसमें दब जायें और खेत को एक सप्ताह के लिए खुला छोड़ दें। इस बीच सिंचाई कर दें। जब दुबारा खरपतवार उगती दिखाई दे तो उसकी दो तीन बार गहरी जुताई कर देनी चाहिये तथा पाटा चला दें। इससे खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाती है।

खाद एवं उर्वरक का प्रबंधन: -

आखिरी जुताई के पहले खेत में प्रति हेक्टेयर के हिसाब से 20 से 25 टन गोबर की खाद या वर्मी कम्पोस्ट खाद डालनी चाहिये। इसके बाद जब बुवाई होनी हो उससे पहले खेत में 150 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलो फास्फोरस, 60 किलो पोटाश लाकर रख लें। बुवाई से पहले आखिरी जुताई के समय फास्फोरस और पोटाश तो पूरी मात्रा डाल दें और नाइट्रोजन की केवल एक तिहाई मात्रा ही डालें। बची हुई नाइट्रोजन को आधा-आधा बांट लें। उसमें से एक हिस्सा 30 दिन के बाद और दूसरा हिस्सा 50 दिन के बाद खेत में खड़ी फसल पर छिड़क दें।

लाभकारी अच्छी किस्में: -

पत्ता गोभी के रंग, रूप आकार व पैदावार के आधार पर इसकी किस्मों को कई भागों में बांटा गया है, जो इस प्रकार हैं-

1. **अगेती किस्में** अगेती फसल के लिए उपयुक्त किस्में गोल्डन एकर, प्राइड आफ इंडिया, पूसा मुक्ता एवं मित्रा, मीनाक्षी आदि प्रमुख हैं।
2. **मध्यम किस्में** मध्यम समय में खेती करने के लिए उपयुक्त किस्में अर्ली ड्रमहेड, पूसा मुक्त, आदि प्रमुख हैं।
3. **पछेती किस्में** लेट ड्रम हेड, डेनिस वाल हेड, मुक्ता, पूसा ड्रम हेड, रेड कैबेज, पूसा हिट, टायड, कोपेन हेगन,गणेश गोल, हरी रानी कोल आदि प्रमुख हैं।
4. इनके अलावा माही क्रांति, गुड्डी वाल 65, इंदु, एसएन 183, बीसी 90 भी प्रमुख किस्में हैं।

बीज की मात्रा व अन्य जानकारियां: -

किसान भाइयों अगेती किस्म की फसलों को लेने के लिए प्रति हेक्टेयर 500 ग्राम की बीज की आवश्यकता होती है जबकि पछेती खेती के लिए 400 ग्राम के आसपास ही जरूरत होती है। इसका कारण यह है कि अगेती किस्म की पौध लगाने में मरने वाले पौधों की संख्या अधिक होती है। इसलिये बीज अधिक लगाया जाता है।

कब-कब की जाती है बिजाई: -

पत्ता गोभी की फसल साल में दो बार की जा सकती है। इसकी फसल बरसात व गर्मी के लिए अलग-अलग समय पर ली जाती है।

1. गर्मी के लिए पत्ता गोभी की बिजाई नवम्बर, दिसम्बर व जनवरी में की जाती है।
2. बरसात के समय पत्ता गोभी तैयार करने के लिए बिजाई मई, जून व जुलाई में की जाती है।
3. अगेती खेती यानी गर्मी की फसल के लिए अगस्त-सितम्बर के मध्य तक नर्सरी में बीज की बुवाई कर देनी चाहिये। पछेती फसल के लिए सितम्बर व अक्टूबर कर देनी चाहिये। इसी तरह बरसात की फसल के लिए अगेती फसल के लिए मार्च अप्रैल में नर्सरी की तैयारी कर लेनी चाहिये और पछेती किस्मों की फसल के लिए मई-जून में नर्सरी तैयार करनी चाहिये।

नर्सरी की तैयारी व पौधारोपण: -

एक मीटर लम्बी और ढाई मीटर चौड़ी क्यारी बनायें। इसमें गोबर की खाद और वर्मी कम्पोस्ट का इस्तेमाल करते हुए बीज की बुवाई करनी चाहिये। पौधशाला ऊंचाई पर बनानी चाहिये। लगभग एक माह में पौध तैयार हो जाती है। इसके बाद खेत में क्यारी बनाकर पौधों का रोपण करना चाहिये। रोपते समय पौधों की लाइन की दूरी एक फुट होनी चाहिये और पौधों से पौधों की दूरी भी एक फुट ही होनी चाहिये।

सिंचाई का प्रबंधन किस प्रकार करें: -

बुवाई के एक सप्ताह बाद पहली सिंचाई करनी चाहिये। पत्ता गोभी की अच्छी पैदावार के लिए खेत में नमी हमेशा रहनी चाहिये। बरसात के समय किसान भाई आप खेत की स्थिति के अनुसार सिंचाई करें। सीजन में वर्षा समय पर न होने पर प्रत्येक पखवाड़े में एक बार सिंचाई अवश्य करायें। गर्मी के मौसम मे प्रत्येक सप्ताह में खेतों की सिंचाई करायें।

खरपतवार का नियंत्रण कैसे करें: -

खरपतवार को नियंत्रण करने के लिए किसान भाइयों को खेत की कम से कम चार बार निराई गुड़ाई करनी चाहिये। निराई गुड़ाई करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि खरपतवार निकालने जो मिट्टी जड़ों से हट जाती है उसे फिर से चढ़ा देना चाहिये। इसके अलावा खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडीमेथालिन की 3 लीटर मात्रा को एक हजार लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

कीट एवं व्याधियों की रोकथाम: -

किसान भाइयो पत्ता गोभी की खेती में कीट एवं इल्लियों की रोक. थाम सबसे जरूरी है। पत्ता गोभी में शुरू से ही कीटों का लगना शुरू हो जाता है। यदि समय पर इनका नियंत्रण न किया जा सकता तो फसल पूरी तरह से चौपट हो सकती है। फसलों के लिए सबसे हानिकारक इल्लियों, लूपर्स और कीट अनेक प्रकार हैं,इनमें से प्रमुख कुछ इस प्रकार हैं-

1. आरा मक्खी
2. फली बीटल
3. पत्ती भक्षक लटें
4. हीरक तितली
5. गोभी की तितली
6. तम्बाकू की इल्ली

उपचार या रोकथामरू इन सभी इल्लियों व कीटों को नियंत्रण करने के लिए नीम की निबौली का अर्क 4 प्रतिशत या बीटी -1 एक ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करना चाहिये। जो किसान भाई इन्सेक्टीसाइड से नियंत्रण करना चाहें कृवो स्पिनोसैड 43 एससी 1 मिलीलीटरप्रति 4 लीटर पानी में या एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एससी 1 ग्राम प्रति 2 लीटर पानी में या क्लोरऐन्ट,निलिमोल 18.5 एसासी एक मिली लीटर प्रति 10 लीटर पानी में या फेनवेलहेट 20 ईसी 1.5 मिलीलीटर प्रति 2 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। पत्ता गोभी के पत्तों को चूस कर पौधे को कमजोर बनाने वाला एक कीट मोयला भी है, जिसकी रोकथाम करने के लिए डाइमेथेएट 30 ईसी 2. 0 मिलीटर प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 1 मिलीलीटर प्रति 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। आर्द्रगलन रोगरू इस रोग को डम्पिंग आफ भी कहते हैं। यह रोग अगेती किस्मों की नर्सरी में लगना शुरू होता है। इससे पौधे मरने लगते हैं। इसकी रोक थाम के लिए थाइम या कैप्टान 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिये। रोग के संकेत मिलने पर बोर्डो मिश्रण 2रू2रू50 या कॉपर आक्सीक्लोराइड को 3 ग्राम प्रतिलीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। काला सड़न भी बीजों की क्यारी में या नई पौध में लगता है। इससे फूलों व डंठलों में सड़न पैदा होती है। इसकी रोकथाम पत्ता गोभी की बीजों की बुवाई से पहले स्ट्रेप्टोसाक्लिन 250 ग्राम या बाविस्टिन एक ग्राम प्रतिलीटर पानी में घोल कर 2 घंटे तक भिगोकर रखें। उसे छाया में सुखाने के बाद ही बुआई करें। बाद में रोग के संकेत मिलने पर इन्हीं दोनों दवाओं का छिड़काव करें।

फसल की कटाई: -

किसान भाइयों जब फसल तैयार हो जाये तब आपको फसल की कटाई यानी पत्ता गोभी की तुड़ाई बाजार भाव देख कर करें। अधिकांश किस्मों की फसलें 75 से 90 दिनों के भीतर तैयार हो जातीं हैं। जबकि कुछ ऐसी किस्में भी हैं जिनकी फसल 55 दिन में ही कटाई के लिए तैयार हो जाती है। पत्ता गोभी के पूरा बड़ा होने पर ही उसकी कटाई करनी चाहिये। पत्ता गोभी अच्छी तरह कड़ा होने पर ही काटा जाना चाहिये। किसान भाइयों पत्ता गोभी की कटाई का समय ठंडा मौसम ही सबसे उपयुक्त होता है। इसको कटाई के बाद छाया या नमी वाली जगह में रखना चाहिये। जिससे काफी समय तक ताजा बना रहे। जब पत्ता गोभी कड़ा हो जाये और उसके पत्ते अलग अलग होने लगे तो तुरन्त काट लेना चाहिये। किसान भाइयों पत्ता गोभी की पैदावार प्रति हेक्टेयर कम से कम 50 टन तो होती ही है। अच्छी किस्म और उचित प्रबंधन वाली खेती से पत्ता गोभी को प्रति हेक्टेयर 70 से 80 टन की भी पैदावार प्राप्त की जा सकती है।करनी चाहिये। पौधशाला ऊंचाई पर बनानी चाहिये। लगभग एक माह में पौध तैयार हो जाती है। इसके बाद खेत में क्यारी बनाकर पौधों का रोपण करना चाहिये। रोपते समय पौधों की लाइन की दूरी एक फुट होनी चाहिये और पौधों से पौधों की दूरी भी एक फुट ही होनी चाहिये।

लोबिया की खेती : किसानों के साथ साथ दुधारू पशुओं के लिए भी वरदान

लोबिया को बहुत ही पोषक फसल माना जाता है। इसको पूरे भारत भर में उगाया जाता है। लोबिया के बहुआयामी उपयोग है। जैसे खाद्य, चारा, हरी खाद और सब्जी के रूप में होता है।लोबिया मनुष्य के खाने का पौष्टिक तत्व है तथा पशुधन चारे का अच्छा स्रोत भी है। ये दुधारू पशुओं में दूध बढ़ाने का भी अच्छा जरिया बनता है तथा इसके खाने से पशु का दूध भी पौष्टिक होता हैद्य इसके दाने में 22 से 24 प्रोटीन, 55 से 66 कार्बोहाईड्रेट, 0.08 से 0.11 कैं. लिशयम और 0.005 आयरन होता हैद्य इसमे आवश्यक एमिनो एसिड जैसे लाइसिन, लियूसिन, फेनिलएलनिन भी पाया जाता है।

खेत की तैयारी: -

जैसा की आमतौर पर सभी फसलों के लिए गोबर की बनी हुई खाद बहुत आवश्यक होती है उसी तरह से लोबिया की फसल के लिए भी गोबर की सड़ी खाद बहुत आवश्यक होती है. इसके खेत में बुवाई से पहले नाइट्रोजन की मात्रा 20 ाह पर एकड़ के हिसाब से मिला देना चाहिए. गोबर की 20-25 टन मात्रा बुवाई से 1 माह पहले खेत में डाल दें। जिससे की खाद में जो भी खरपतवार हो वो उग जाये और नष्ट हो सकेद्य खाद डालने के बाद इसमें हैरो से 2 बार जुताई कर दें तथा 1 बार कल्टीवेटर निकाल दें जिससे की मिटटी मिलाने के साथ साथ इसमें गहराई भी आ सके।

मिटटी और उर्वरक: -

इसको किसी भी तरह की मिटटी में उगाया जा सकता है. वैसे इसके लिए रेतीली और दोमट मिटटी उपयुक्त रहती है. जल निकासी की सामान्य व्यवस्था होनी चाहिए. खेत में पानी रुकना नहीं चाहिए. लोबिया एक दलहनी फसल है, इसलिए नत्रजन की 20 कि.ग्रा, फास्फोरस 60 किग्रा तथा पोटाष 50 किग्राद्धहैक्टेयर खेत में अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिला देना चाहिए तथा 20 किग्रा नत्रजन की मात्रा फसल में फूल आने पर प्रयोग करें।

मौसम और बोने का समय: -

मौसम की अगर हम बात करें तो इसके लिए गर्म और नमी वाला मौसम अच्छा रहता है. इसको फरवरी,-मार्च और जून,-जुलाई में उगाया जा सकता है. इसके लिए 20 से 30 डिग्री तक का तापमान उचित रहता जो की इसके बीज को अंकुरित होने में सहायता करता है. 17 डिग्री से कम के तापमान पर इसे उगाना संभव नहीं है।

लोबिया की उन्नत प्रजातियों : -

हमारे कृषि वैज्ञानिक लगातार अपनी फसलों में उन्नत किस्में लेन के लिए मेहनत करते रहते हैं. लोबिया के लिए भी कुछ अच्छी पैदावार वाली किस्में विकसित की हैं. लोबिया की कुछ उन्नत प्रजातियां हैं जो निचे दी गई हैं।

पूसा कोमल लोबिया की यह किस्म रोग प्रतिरोधक है. इसमें आसानी से रोग नहीं आता है. इस किस्म की बुवाई बसंत, ग्रीष्म और बारिश, तीनों मौसम में आसानी से की जा सकती है. इसकी फलियों का रंग हल्का हरा होता है. यह मोटा गुदेदार होता है, जो कि 20 से 22 सेमी लम्बा होता है. इस किस्म की बुवाई से प्रति हेक्टेयर 100 से 120 क्विंटल पैदावार मिल जाती है।

पूसा बरसाती जैसा की नाम से ही पता चलता है इसको बरसात के मौसम में यानि जुलाई के महीने में लगाना ज्यादा सही रहता है. इसकी फलियों का रंग हल्का हरा होता है, जो कि 26 से 28 सेमी लंबी होती है. खास बात है कि यह किस्म लगभग 45 दिन में पककर तैयार हो जाती है. इससे प्रति हेक्टेयर लगभग 70 से 75 क्विंटल पैदावार मिल जाती है।

अर्का गरिमा अर्का गरिमा पौधे ऊँचे और लम्बे होते है तथा ये पशु चारे के लिए भी उपयुक्त होते हैं। फलियाँ हल्की हरी, लंबी, मोटी, गोल, माँसल और रेशे-रहित हैं। सब्जी बनाने के लिए उत्तम हैं। ताप और कम नमी के प्रति सहनशील है।

पूसा फालगुनी जैसा की नाम से विदित हो रहा है इसको फरवरी और मार्च के महीने में लगाया जाता है. इसका पौधा छोटा तथा झाड़ीनुमा किस्म के होते हैद्य इसकी फली का रंग गहरा हरा होता है. इनकी लंबाई 10 से 20 सेमी होती है. खास बात है कि यह लगभग 60 दिन में पककर तैयार हो जाती हैं. इससे प्रति हेक्टेयर लगभग 70 से 75 क्विंटल पैदावार मिल सकती है।

पूसा दोफसली किस्म को फरवरी से लेकर जुलाई, अगस्त तक लगाया जा सकता है, ये तीनों मौसम में लगाई जाती है. इसकी फली का रंग हल्का हरा पाया जाता है. यह लगभग 17 से 18 सेमी लंबी होती है. यह 45 से 50 दिन में पककर तैयार हो जाती हैं. इससे प्रति हेक्टेयर 75 से 80 क्विंटल पैदावार मिल सकती है।

पशु चारे की उन्नत किस्म विकसित

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,हिसार के कृषि वैज्ञानिकों ने पशुओं के चारे की फसल ज्वार की नई व उन्नत किस्म 'सीएसवी 44 एफ' विकसित कर विश्वविद्यालय के नाम एक और उपलब्धि दर्ज करवा दी है। ज्वार की इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित 84वीं बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। बैठक की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के फसल विज्ञान के उप-महा. निदेशक डॉ. टी.आर. शर्मा ने की थी। ज्वार की यह किस्म दक्षिणी राज्यों मुख्यत: कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए सिफारिश की गई है। हालांकि इस किस्म को विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएयू में ही विकसित किया है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि 'सीएसवी 44 एफ' किस्म में अन्य किस्मों की तुलना में प्रोटीन व पाचनशीलता अधिक है, जिसकी वजह से यह पशु के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करती है। इस किस्म में मिठास 10 प्रतिशत से भी अधिक व स्वादिष्ट होने के कारण पशु इसे खाना काफी पसंद करते हैं। इस किस्म में हरे चारे के लिए प्रसिद्ध किस्म 'सीएसवी 21 एफ' से 7.5 प्रतिशत व 'सीएसवी 30 एफ' से 5.8 प्रतिशत अधिक हरे चारे की पैदावार होने के कारण किसानों को अधिक मुनाफा भी होगा। सिफारिश किए गए उचित खाद व सिचाई प्रबंधन के अनुसार यह किस्म अधिक पैदावार देने में सक्षम है और इसे लवणीय भूमि में भी उगाया जा सकता है। अधिक बारिश व तेज हवा चलने पर भी यह किस्म गिरती नहीं है। ज्वार में प्राकृतिक तौर पर पाया जाने वाला विषैला तत्व धूरिन इस किस्म में बहुत ही कम है। 'सीएसवी 44 एफ' किस्म तनाछेदक कीट की प्रतिरोधी है व इसमें पत्तों पर लगने वाले रोग भी नहीं लगते।

विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि 'सीएसवी 44 एफ' किस्म को विकसित करने में इस विभाग के चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. पम्मी कुमारी, डॉ. सत्यवान आर्य, डॉ. एस.के. पाहुजा, डॉ. एन.के. ठकराल एवं डॉ. डी.एस. फोगाट की टीम की मेहनत रंग लाई है। इसके अलावा डॉ. सतपाल, डॉ. जयंती टोकस, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. विनोद मलिक एवं डॉ.सरिता देवी का भी विशेष सहयोग रहा है।

नई किस्म को विकसित करने वाली टीम सदस्य डॉ. डी.एस. फोगाट ने बताया कि हालांकि इस किस्म को एचएयू में ही विकसित किया गया है, लेकिन कमेटी द्वारा इसकी गुणवत्ता व पैदावार को ध्यान में रखते हुए अभी देश के दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक)में हरे चारे की उत्तम पैदावार के लिए सिफारिश किया गया है। इस किस्म को प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण के तौर पर लगाया गया था, जहां इसके बहुत ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। इसलिए यहां किसानों के लिए भी इसकी सिफारिश संबंधी प्रपोजल जल्द ही कमेटी को भेजा जाएगा। उन्होंने बताया कि चारा अनुभाग 1970 से अब तक ज्वार की कुल आठ किस्में विकसित कर चुका है। इनमें से बहु-कटाई वाली किस्म एसएसजी 59-3 (1978), दो कटाई वाली किस्म एचसी 136 (1982) व एक कटाई वाली किस्में एचसी 308 (1996), एचजे 513 (2010) और एचजे 541 (2014) किसानों की पहली पसंद बनी हैं।

ग्वार की वैज्ञानिक खेती की जानकारी

ग्वार की खेती कम लागत वाली और कम पानी वाली फसल मानी जाती है। इसे मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में किया जाता है। बीते सालों में तो ग्वार गम की मांग इस कदर बढ़ी की किसी भाव इसका बीज नहीं मिला। इसे सब्जी, हरा चारा, हरी खाद एवं ग्वार गम के दानों के लिए उगाया जाता है। गहरे जड़ तंत्र वाली फसल होने के साथ इसकी जड़ों से अन्य दलों की तरह मिट्टी में नत्रजन की मात्रा बढ़ती है। इसके दानो में 40 से 45: तक प्रोटीन होता है। इसके अलावा गैलेक्टोमेन्नन ग्वार गम मिलने के कारण इसे औद्योगिक फसल भी माना जाता है। इसकी उद्योगों के लिए विशेष मांग रहती है।

मृदा एवं जलवायु: -

ग्वार की खेती के लिए उपजाऊ मिट्टी श्रेष्ठ रहती है। बाकी इसे हर तरह की मिट्टी में लग. या जा सकता है। बेहतर जल निकासी वाली जमीन इसकी खेती के लिए उपयुक्त रहती है क्योंकि इसकी जड़ें जमीन में गहरे तक जाती है लिहाजा खेत की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरे तक करनी चाहिए।

बुवाई का समय: -

ग्वार की बिजाई के लिए जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक का समय उचित रहता है लेकिन जून में उन्हीं इलाकों में बिजाई करनी चाहिए जहां सिंचाई के साधन हो अन्यथा की दशा में जुलाई के पहले हफ्ते में ही इसकी बिजाई करनी चाहिए।

ग्वार की उन्नत किस्में : -

अच्छे उत्पादन के लिए उन्नत किस्म का होना आवश्यक है ग्वार कई प्रयोजनों से लगाई जाती है लिहाजा इस चीज का ध्यान रखकर ही किस्म चुनें। ग्वार की खेती दाने के लिए हरे चारे के लिए हरी खाद के लिए एवं सब्जी वाली फली के लिए की जाती है और इसकी अलग-अलग किस्में है।

गाजर की किस्में : -

गाजर को सामान्यतः दो किस्मों में बांटा जाता है यूरोपियन एवं एशियन. जैसा की नाम से ही पता चल रहा है यूरोपियन ज्यादा तापमान नहीं सह पाती है जबकि एशियन थोड़ा तापमान ज्यादा हो तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता.

मध्य प्रदेश राज्य के लिए दाने वाली किस्में -

इस श्रेणी की एचजी 565 किस्म कम समय में पकने वाली है इससे उपज 20 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक मिलती है एचजी 365 किस हमसे भी उपरोक्त अनुसार उपज मिलती है आरजीसी 1066 किस्म की उपज 18 कुंटल तक मिलती है।

सब्जी वाली किस्में -

पूसा नवबाहर किस्म देरी से पकती है एवं इससे 40 से 50 कुंतल तक फलियां प्राप्त होती हैं। इस श्रेणी की दुर्गा बहार किस्म का फूल सफेद होता है और उपज 55 कुंटल के पार मिलती है।

चारे वाली किस्में -

चारे के लिए लगाई जाने वाली किस्मों में एच एफ जी 119 देरी से पकने वाली किस्म है। इससे 300 से 325 कुंतल चारा मिलता है।

हरियाणा राज्य के लिए ग्वार की किस्में
हरियाणा राज्य के लिए ग्वार की एचजी 75, 182, 258, 365 ,563, 870 , 884, 867 तथा एच जी-2 -204 आदि किसमें प्रमुख हैं।

राजस्थान राज्य के लिए ग्वार की किस्में-

राजस्थान के लिए आरजीसी सीरीज की 1033, 1066,1038, 1003, 1002, 986,112 आरजीसी 197 किस्में प्रमुख हैं।

पंजाब के लिए ग्वार की किस्में-

हरियाणा राज्य के लिए संस्कृत सभी किस्मों के अलावा एचजी 112किस्म यहां के लिए उपयुक्त है।

उत्तर प्रदेश के लिए ग्वार की किस्में-

उत्तर प्रदेश के लिएीह 563 एवं 365 किस्म उपयुक्त हैं। गुजरात के लिए जीसी एक एवं 238 किसमें संस्तुत हैं।

आंध्र प्रदेश के लिए ग्वार की किस्में-

आंध्र प्रदेश के लिए आरजीसी 936 , आरजीएम 112 एचजी 563, एचजी 365 किस्म उपयुक्त हैं। महाराष्ट्र हेतु आरजीसी 9366, एचजी 563 एवं 365 किस्म उपयुक्त हैं।

बीज दर: -

क्योंकि ग्वार का उत्पादन कई प्रयोजनों के लिए किया जाता है अतः ग्वार बीज उत्पादन हेतु 15 से 20 किलोग्राम, सब्जी के लिए 15 किलोग्राम, चारा एवं हरी खाद के लिए 40 से 45 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। बीज जनित रोगों से बचाव के लिए कार्बेंडाजिम 1 ग्राम एवं कैप्टन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में मिलाकर उपचारित करके ही बीज बोना चाहिए। इसके अलावा 20 पर राइजोबियम कल्चर का लेप करने से उत्पादन बढ़ता है।

उर्वरक प्रबंधन: -

उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर ही करना चाहिए लेकिन यदि मिट्टी की जांच नहीं हुई है तो दाने वाली फसल में 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस 20 बटा 25 गंधक एवं 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। सब्जी वाली फसल के लिए 25 केजी नाइट्रोजन, 50 फास्फोरस, 20 पोटाश, 25 गंधक एवं 20 केजी जिंक आखरी जोत में मिला देनी चाहिए। चारा उत्पादन वाली फसल में गंधक एवं जिनक नहीं डालनी चाहिए। पोटाश की मात्रा दोगुनी की जा सकती है। इसके अलावा नाइट्रोजन 20 किलोग्राम एवं फास्फोरस 50 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डालना चाहिए।

ग्वार में कीट रोग नियंत्रण: -

ग्वार में कई तरह के कीट लगते हैं।आवारा पशुओं को भी यह बेहद भारती है। इसकी खेती गांव में सड़क के नजदीकी खेतों में नहीं करनी चाहिए। पशुओं से नुकसान होने की आशंका वाले क्षेत्रों में इसकी खेती कड़ी सुरक्षा के बाद ही सफल होगी। ग्वार के महु या चेंपा भी लगता है इसे रोकने के लिए अमीना क्लोरोफिल एवं डाई मेथड में से किसी एक दवा की उचित मात्रा का छिड़काव करें। फली एवं पति छेदक कीट के नियंत्रण के लिए चुनाव फास्ट डे डे मील प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। लिफाफा जैसे जैसे भी कहा जाता है कि नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड की उचित मात्रा कार्य पर पर ध्यान पूर्वक निर्देश पढ़कर छिड़काव करें। फफूंदी जनित रोगों से बचाव के लिए कार्बेंडाजिम मैनकोजेब एवं घुलनशील गंधक में से किसी एक का एक दो बार छिड़काव करें। बैक्टीरियल बीमारियों के लिए स्टेप तो साइकिल इन 3 ग्राम प्रति एकड़ पर्याप्त पानी में घोलकर छिड़काव करें।

इस तरीके से करें चौलाई की उन्नत खेती, गर्मी के मौसम में होगी मनचाही कमाई

किसी भी फसल को तैयार करने के लिए किसान भाइयों आपको सबसे अधिक मेहनत करनी पड़ती है लेकिन आपको अपनी मेहनत के अनुसार लाभ नहीं मिल पाता है। यदि आप कम लागत में अधिक मुनाफा कमाना चाहते हैं तो चौलाई की फसल के जरिए अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं। चौलाई की फसल भारत के कई क्षेत्रों में उगाई जाती है। इस फसल को शहरी क्षेत्रों के आसपास सबसे ज्यादा उगाया जाता है। यह फसल पत्तियों वाली सब्जियों की मुख्य फसल है जिसका इस्तेमाल आलू के साथ-साथ या अन्य भुजी के रूप में किया जाता है। इसके अलावा लड्डू के रूप में भी चौलाई का प्रयोग किया जाता है। यदि आप चौलाई की फसल करना चाहते हैं तो आपके लिए यह फसल काफी फायदेमंद होगी। आज हम आपको इस लेख के माध्यम से बताने जा रहे हैं कि, आप चौलाई की खेती कैसे कर सकते हैं और इसकी खेती करने के क्या-क्या फायदे हैं। तो आइए जानते हैं चौलाई की खेती करने की संपूर्ण जानकारी।

चौलाई की खेती का परिचय: -

चौलाई पत्तियों वाली सब्जियों की प्रमुख फसल में से एक है। इस सब्जी का उत्पादन न सिर्फ भारत बल्कि मध्य एवं दक्षिणी अमेरिका, पश्चिम अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीका साथ ही दक्षिणी पूर्वी एशिया में भी किया जाता है। इतना ही नहीं बल्कि चौलाई की करीब 685 प्रजाति है जो एक दूसरे से काफी अलग-अलग है। चौलाई की पैदावार हिमालय क्षेत्रों में अधिक होती है। दरअसल यह एक गर्म मौसम में तैयार की जाने वाली फसल है। जबकि इसकी कई किस्में ग्रीष्म और वर्षा ऋतु में भी उगाई जाती है।

चौलाई की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी: -

बता दें, चौलाई की खेती जलभराव वाली मिट्टी में नहीं की जा सकती है। दरअसल जलभराव वाले खेतों में चौलाई के पौधे अच्छे से विकसित नहीं हो पाते हैं, ऐसे में यह पकने से पहले ही खराब हो जाती है। इसकी खेती कार्बनिक पदार्थों से भरपूर और जल निकासी वाली भूमि में ही होती है। इसका सही उत्पादन करने के लिए भूमि का
च्ह मान करीब 6 से 8 के बीच होना चाहिए।

चौलाई की खेती के लिए जलवायु और तापमान: -

चौलाई की खेती गर्मी के मौसम में की जाती है, जबकि सर्दी का मौसम चौलाई की खेती के लिए अच्छा नहीं माना जाता है। चौलाई का उत्पादन शीतोष्ण और समशीतोष्ण दोनों तरह की जलवायु में किया जा सकता है। बता दें, चौलाई के पौधों को अंकुरित होने के लिए करीब 20 से 25 डिग्री के बीच तापमान की आवश्यकता होती है। इसके बाद जब पौधे अंकुरित हो जाते हैं तब उनके विकास के लिए करीब 30 डिग्री के आसपास तापमान सही माना जाता है। हालांकि गर्मी के मौसम में अधिकतम 40 डिग्री तापमान पर भी चौलाई के

कितनी होती है चौलाई की किस्में?: -

वैसे तो मार्केट में चौलाई की कई किस्में आसानी से उपलब्ध हो जाती है लेकिन कम समय में और अधिक मात्रा में पैदावार करने के लिए इन निम्न किस्मों का अधिक उत्पादन किया जाता है।

कपिलासा

कपिलासा चौलाई की एक ऐसी किस्म है जो जल्द ही पैदा हो जाती है। इसका उत्पादन प्रति हेक्टेयर 15 क्विंटल के आसपास पाया जाता है। चौलाई की इस किस्म के पौधे की लंबाई 2 मीटर के आसपास होती है। इस किस्म की चौलाई बुवाई के करीब 30 से 40 दिन बाद ही सब्जी के रूप में कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

बडी चौलाई

इस किस्म को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के द्वारा तैयार किया गया है। इसके पौधे के तने का आकार थोड़ा मोटा पाया जाता है और इसकी पत्तियां भी बड़े आकार की होती है। वहीं इसके तने और पत्तियों का रंग हरा होता है। गर्मी के मौसम में इस किस्म के पौधे अधिक पैदावार देते हैं।

छोटी चौलाई

छोटी चौलाई की किस्म भी भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली के द्वारा ही तैयार किया गया है। इस किस्म के पौधों की लंबाई बाकी किस्म के पौधों से थोड़ी कम होती है और इसकी पत्तियों का आकार भी थोड़ा छोटा होता है। इस किस्म की चौलाई को बारिश के मौसम में उगाना सबसे अच्छा माना जाता है।

अन्नपूर्णा चौलाई

चौलाई की यह एक ऐसी किस्म है जिसे अधिक पैदावार देने के लिए तैयार किया गया है। इसके पौधे की ऊंचाई करीब 2 मीटर के आसपास होती है। इस किस्म की चौलाई को हरी फसल के रूप में ही काटना सबसे उपयुक्त माना जाता है। यह किस्म बीज बोने के करीब 30 से 35 दिन बाद ही कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

पूसा लाल चौलाई

इस किस्म की चौलाई के पौधों की पत्तियों का रंग लाल जबकि डंठल का रंग हरा होता है। इसकी पत्तियों का आकार काफी बड़ा होता है। इस किस्म की सबसे खास बात यह है कि, इसका उत्पादन बरसात और गर्मी दोनों ही मौसम में किया जा सकता है। यह फसल बोने के करीब लगभग 30 दिन बाद ही कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

सुवर्णा चौलाई

सुवर्णा चौलाई की एक ऐसी किस्म है जो उत्तर भारत में सबसे ज्यादा उगाई जाती है। इसका प्रति हेक्टेयर उत्पादन 15 से 20 क्विंटल के आसपास होता है। सुवर्णा किस्म की चौलाई बोने के करीब 80 से 90 दिन बाद कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

गुजराती अमरेंथ 2

चौलाई की यह किस्म कम समय में अधिक पैदावार के लिए जानी जाती है। इस किस्म के पौधे रोपने के करीब लगभग 3 महीने बाद ही कटने के लिए तैयार हो जाते हैं। बता दें, इस किस्म का उत्पादन सबसे ज्यादा गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में किया जाता है। इसके अलावा भी बाजार में कई किस्मों में चौलाई मौजूद हैं जिन्हें अलग-अलग मौसम के आधार पर पैदा किया जाता है।

कैसे करें चौलाई के पौधों की सिंचाई?: -

चौलाई के बीज रोपने के बाद इसमें तुरंत पानी नहीं देना चाहिए। यदि आप सुखी भूमि में बीच की रोपाई करते हैं तो तुरंत पानी देना सही है और अंकुरित होने तक खेतों में नमी बनाए रखें। बीजों के अंकुरित होने के बाद आप पहली सिंचाई रुपाई के 20 से 25 दिन बाद कर दें। यदि आप इसकी हरी पत्ती के रूप में फसल चाहते हैं तो इसके पौधों को गर्मियों के मौसम में सप्ताह में एक बार जरूर पानी दे।

कैसे करें चौलाई के खरपतवार पर नियंत्रण?: -

इस फसल की अच्छी पैदावार के लिए आपको खरपतवार नियंत्रण पर सबसे ज्यादा ध्यान देना होगा। दरअसल खरपतवार में पाए जाने वाले कीड़े इसकी पत्तियों को अधिक नुकसान पहुंचाते हैं जिससे इसकी गुणवत्ता और पैदावार में कमी हो जाती है। इसके लिए आप सबसे पहले बीज बोने के करीब 10 से 12 दिन बाद ही खेत में हल्की गुड़ाई कर दें। इसके बाद दूसरी गुड़ाई 40 दिन बाद कर देनी चाहिए। गुड़ाई करने के दौरान चौलाई के पौधों की जड़ों पर हल्की मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए।

चौलाई के लिए खाद की सही मात्रा: -

चौलाई की अच्छी पैदावार के लिए गोबर की खाद सबसे अच्छी मानी जाती है। ऐसे में आप 15 से 20 ट्राली प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद खेत में डालें। जबकि रासायनिक उर्वरक 25 किलो डाई अमोनियम फास्फेट 80 से 100 किलो प्रति हेक्टेयर में डालें। चौलाई में तना वीविल, तंबाकू की सुंडी, पर्ण जालक जैसे कीट का अधिक प्रकोप देखने को मिलता है। ऐसे में आप जैविक कीटनाशक का प्रयोग कर सकते हैं।

चौलाई की बुवाई का सही समय: -

बता दें, उत्तरी भारत में चौलाई को करीब 2 बार बोया जाता है। यहां पर पहली बुवाई फरवरी से मार्च के बीच और दूसरी बुवाई जुलाई में कर दी जाती है। मार्च और फरवरी के बीच बुवाई करने से गर्मी के मौसम में इसकी पत्तियां खाने को मिल जाती है, वहीं जुलाई में बुवाई करने के दौरान वर्षा ऋतु के मौसम में इसकी पत्तियां खाने को मिल जाती है। चौलाई की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए आप इसकी बुवाई पंक्तियों में करें। बता दें, एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति की दूरी करीब 50 सेंटीमीटर जबकि पौधे से पौधे की दूरी 15 से 20 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

फसल की कटाई करने का सही समय: -

चौलाई के पौधे की कटाई अलग-अलग समय पर की जाती है। दरअसल इसकी कटाई आपके द्वारा बोई गई किस्मों पर निर्भर होती है। बता दें, चौलाई की लाल और हरी पत्तियों का इस्तेमाल करने के लिए आप इसकी कटाई बुवाई के करीब 25 से 20 दिन बाद ही कर ले। यदि आप इसकी पत्तियों की गुणवत्ता अच्छी चाहते हैं तो इसकी तीन से चार बार कटाई कर ले। इसके अलावा जब आप दानों की पैदावार के लिए फसल चाहते हैं तो जब इसकी बालियां पीली पड़ने लगे तो आप इसकी कटाई कर ले। चौलाई की फसल करीब 90 से 100 दिनों में आराम से तैयार हो जाती है।

चौलाई की पैदावार और लाभ: -

चौलाई की फसल से आप अपनी इच्छा अनुसार लाभ कमा सकते हैं। दरअसल इस फसल की कटाई किसान भाई 2 से 3 बार कर सकते हैं। इसके बीज के साथ-साथ आप इसकी पत्तियों को बेचकर भी लाभ कमा सकते हैं। चौलाई की पैदावार से कोई भी व्यक्ति एक बार में 1 हेक्टेयर से काफी अच्छी कमाई कर सकता है। यदि आप इसकी अलग-अलग किस्में उगाते हैं तो आपको इस फसल का अधिक फायदा होगा। मार्केट में भी चौलाई की मांग अधिक है ऐसे में आप इस फसल के जरिए मनचाहा लाभ कमा सकते हैं।

क्रॉप कटर की सम्पूर्ण जानकारी

किसान भाइयों आप तो जानते ही हैं कि आजकल देश में तेजी से बढ़ रहे औद्योगीकरण और शहरीकरण से गांवों में खेती-किसानी के काम करने वाले मजदूरों का मिलना मुश्किल हो गया है। जो मजदूर मिलते भी हैं वे काफी अधिक मजदूरी लेते हैं। इससे छोटे किसान भाई अपने खेती के काम खुद ही करना पसंद करते हैं। लेकिन खेती के कुछ काम ऐसे भी होते हैं जिन्हें कोई भी किसान भाई अकेले नहीं कर सकता है। जैसे खेत की कटाई का काम सबसे बड़ा काम है। इसमें कई मजदूर लगाने होते हैं। लेकिन विज्ञान ने इसका भी विकल्प निकाल लिया है। खेत की कटाई के लिए क्रॉप कटर मशीन किसान भाइयों की मदद करने के लिए आ गयी है। इस कटर मशीन के अनेक फायदे हैं। आइए जानते हैं क्रॉप कटर व उनसे मिलने वाले लाभ के बारे में।

क्या है क्रॉप कटर मशीन: -

जहां पहले परंपरागत औजारों हसिया, दराती से फसलों की कटाई की जाती थी। लेकिन अब उसकी जगह क्रॉप कटर मशीन आ गयी है। इस मशीन के आने से विशेष कर छोटे किसान भाइयों को काफी राहत मिल गयी है। ये क्रॉप कटर मशीन क्या चीज है, जानते हैं:-

1. टू स्ट्रोक व 4 स्ट्रोक की छोटे से इंजन में नये तरीके से डिजाइन किये गये फसलों के अनुसार अलग-अलग ब्लेडों को लगाकर उससे अनेक तरह की फसलों की कटाई की जाती है। इसे क्रॉप कटर मशीन कहते हैं।
2. ये इंजन पेट्रोल से चलते हैं, वजन मे आठ से दस किलो के होते हैं। ऑपरेटर अपनें कंधे पर लटका कर आसानी से फसल की कटाई कर सकता है।
3. इन इंजनों में मनचाहे अटैचमेंट लेकर अपनी जरूरत की कोई भी फसल, घास, चारा आदि कटाई कर सकते हैं।
4. इस क्रॉप कटर से एक अकेला व्यक्ति घंटों का काम मिनटों में कर सकता है।

5. हसिया, दराती की कटाई की अपेक्षा इस मशीन में चौथाई भी खर्च नहीं आता है और बहुत तेजी से ज्यादा काम हो जाता है।

कटर मशीन से कौन-कौन सी फसलें काटी जा सकतीं हैं: -

कटर मशीन खेती के काम आने वाली बहुत अच्छी मशीन है। इससे छोटी काश्त वाले किसान भाई अपनी जरूरत की अनेक फसलों को बड़े आराम से अकेले ही काट सकते हैं। इस मशीन से जिन प्रमुख फसलों की कटाई होती है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:-

1. गेहूं
2. जौं
3. धान
4. सरसों
5. गन्ना
6. मक्का

कटर मशीन से कौन-कौन से अन्य काम भी लिये जा सकते हैं: -

खेती में फसल कटाई के अलावा कई और काम इस कटर मशीन से लिये जा सकते हैं। खेती के साथ बागवानी व बाग-बगीचे के काम में भी इस मशीन से कटाई व सफाई का काम किया जा सकता है।

1. झाडी की कटाई
2. घास की कटाई
3. बागवानी में पौधों के बीच या आसपास की खरपतवार की कटाई
4. बागों में पेड़ के किनारे की मिट्टी की गुडाई
5. कुएं से सिंचाई
6. गड्ढे या खेत में भरे पानी को निकालने का काम

कैसी होती है ये क्रॉप कटर मशीन: -

मोटर से चलने वाली यह मशीन गेहूं, जौं, सरसों व धान की फसलों को पकने पर 15 से 20 सेमी की ऊंचाई से काट सकती है। क्रॉप कटर काटने की मशीन में साइकिल के फ्राइव्हील के चक्के के समान कटर ब्लेड आगे लगाकर गेहूं, जौ आदि की फसलों की कटाई की जाती है, जिस ब्लेड में 40 से 120 तक दांत होते हैं। इसकी मोटर 50 सीसी पॉवर के आसपास की होती है। इस मशीन में एक बार में सवा लीटर तक पेट्रोल भरा जाता है। जो लगभग दो से ढाई घंटे तक चलता है।

मशीन के खास पुर्जे: -

1. गोलाकार आरा ब्लेड
2. विंडरोइंग सिस्टम
3. सेफ्टी कवर
4. कवर के साथ ड्राइव सॉफ्ट
5. हैंडल
6. ऑपरेटर के लिए हैंगिंग बैंड पेट्रोल टैंक
7. स्टार्टर नॉब
8. चोक लीवर
9. एयर क्लीनर

कैसे चलती है यह मशीन:-

यह क्रॉप कटर मशीन 25 सेमी की ऊंचाई और 24 सेमी व्यास वाले ब्लेड को आधे बेलन के आकार की एक एल्यूमिनियम की शीट को काटने वाले ब्लेड के ऊपरी भाग पर फिट किया जाता है। उससे पौधों की कटाई की जाती है। फसलों को इकट्ठा करने और एक समान पंक्ति बनाने के लिए एक गार्ड भी लगा होता है।

कटर मशीन से किसान भाइयों को होने वाला लाभ:-

क्रॉप कटर मशीन से किसान भाइयों, खास कर छोटे किसान भाइयों को अधिक लाभ होता है। उन्हें मजदूर सम्बन्धी अनेक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है। कौन-कौन से लाभ मिलते हैं, उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं:-

1. मजदूरों की तलाश नहीं करनी पड़ती है
2. कटाई के समय महंगी मजदूरी नहीं देनी पड़ती है
3. बिजली आदि का इंतजार नहीं कर पड़ता है
4. फसल कटाई की लागत भी बहुत कम आती है। 75 प्रतिशत की बचत होती है
5. मजदूरों की अपेक्षा फसल की कटाई भी बहुत साफ सफाई तरीके से होती है
6. मजदूरों द्वारा कटाई के समय किया जाने वाला नुकसान नहीं होता है
7. मजदूरों की निगरानी व उनकी सेवा-पानी भी नहीं करना पड़ता है
8. एक रिसर्च के अनुसार इस मशीन से फसल की कटाई में प्रति हेक्टेयर के खेत में 16 घंटे का समय लगता है। इस कटाई में 1800 रुपये की लागत आती है। जबकि मजदूरों से कटाई कराने में एक एकड़ में 25 मजदूरों को एक दिन यानी 8 घंटे का समय लगता है। इसके लिए किसान भाई को कम से कम 7500 रुपये देने पड़ते हैं। इस तरह से मशीन से कटाई में प्रति एकड़ 5700 रुपये की बचत होती है।

किस फसल के लिए कौन सा ब्लेड किया जाता है इस्तेमाल: -

इस क्रॉप कटर मशीन में अलग-अलग फसलों के लिए अलग-अलग ब्लेड का इस्तेमाल करना होता है। जो इस प्रकार है:-

1. मोटे तथा कड़े पौधे के लिए अधिक दांत वाले ब्लेड का उपयोग करना होता है।
2. मुलायम व पतले पौधे के लिए कम दांत वाले ब्लेड का इस्तेमाल किया जाता है।
3. गेहूं, मक्का, सरसों, जौं की फसलों की कटाई के लिए 80 से 120 दांतों वाले ब्लेड का इस्तेमाल किया जाता है।
4. चारा काटने के लिए 60 दांतों वाले ब्लेड का प्रयोग किया जाता है।
5. दो इंच की मोटाई वाले पौधों की कटाई के लिए 40 दांत वाले ब्लेड लगाने चाहिये।
6. गन्ने की कटाई के लिए स्पेशल ब्लेड आता है, उसका उपयोग करना चाहिये।

कैसे करें मशीन का मेंटीनेंस: -

1. मशीन चलाने से पहले कंपनी की गाइडलाइन के अनुसार इंजन ऑयल या ट्रूटी ऑयल अवश्य डालें।
2. पहली बार मशीन को 20 घंटे तक चलाने के बाद इंजन ऑयल अवश्य बदलें।
3. मोटर की कंपनी द्वारा तय किये गये समय पर मोटर की सर्विस अवश्य करायें।
4. काम करने के बाद मशीन को सूखे कपड़े से साफ करें।
5. ईंधन भरने के लिये फ्यूल कैप निकालने से पहले इंजन को अवश्य बंद कर दें। स्पार्किंग होने से आग लगने की आशंका रहती है।
6. एक घंटे तक लगातार मोटर चलाने के बाद मशीन को 15 मिनट के लिए बंद कर दें।
7. सही मेंटीनेंस करने से कटर मशीन पांच साल तक चलाई जा सकती है।
8. सही तरीके से मेंटीनेंस करने से मशीन की मरम्मत आदि में बहुत कम खर्चा आता है।

किसान भाई मशीन चलाते समय क्या सावधानियां बरतें: -

1. मशीन चलाते समय सुरक्षा के सभी उपकरणों को पहनना जरूरी होता है।
2. पुराने घिसे हुए या क्षतिग्रस्त ब्लेड का उपयोग न करे, हानिकारक हो सकता है।
3. मोटर में पेट्रोल भरते समय बीड़ी-सिगरेट न सुलगायें।
4. कटर मशीन और उसके ब्लेडों को बच्चों की पहुंच से दूर रखें।
5. कटर मशीन को आपसी व्यवहार में किसी को भी न बांटें।
6. किसी नौसिखिया से फसल की कटाई न करायें

अच्छी मशीन कौन सी होती है: -

किसान भाइयों आपने तो वो कहावत तो सुन ही रखी होगी कि सस्ता रोये बार-बार, महंगा रोये एक बार। यही हाल इन मशीनों का है। मशीन बनाने वाली कंपनियों ने किसानों के बजट की दुहाई देकर सस्ती मशीने बना रखीं हैं। ये मशीने दो स्ट्रोक की होती हैं। पहली बाद दाम देने में भले ही ये मशीने आपको सस्ती लगतीं हों लेकिन ये ऊपरी चमक-दमक वाली होती हैं। इस तरह की मशीनों मे अच्छी मशीनों की अपेक्षा 25 से 50 परसेंट तक पेट्रोल अधिक लगता है। इन मशीनों की बनावट ऐसी होती है कि इस्तेमाल करने वाले को इंजन का धुआ सीधे शरीर में जाता है और शोर अधिक करने से किसान भाइयों को ध्वनि प्रदूषण का शिकार होना पड़ता है। इसके अलावा ये मशीने कब खराब हो जायें कोई पता नहीं है। यह बात अलग है कि कंपनी इन मशीनों की एक साल की वारंटी देती है लेकिन फसल की कटाई के समय मशीन खराब हो जायेगी तो किसान का काम रुक जायेगा और मशीन कंपनी से कब ठीक होकर आयेगी तब क्या होगा कोई पता नहीं। क्योंकि मशीन बेचते समय सब मीठा बोलते हैं कम्पलेंट करने पर अनेक बहाने व बहस करते हैं।

किसान भाइयो आपको मोटर इंटरनेशल ब्रांड की कंपनी वाली लेनी चाहिये। साथ ही ब्लेड बहुत सारे न लेकर उन ब्लेडों को लें जिसकी आपका जरूरत हो। इस तरह के ब्लेडों के कई सेट भी ले सकते हैं।

मशीन की कीमत: -

क्रॉप कटर मशीन की कीमत अधिक नहीं होती है। वैसे यह मशीन 15 -16 हजार रुपये से लेकर 32 हजार रुपये तक में मिल सकती है। लेकिन किसी ब्रांडेड कंपनी की मोटर सहित 25 हजार रुपये में अच्छी मशीन मिल सकती है। जिन किसान भाइयों को इससे भी अधिक अच्छी मशीन खरीदनी है तो कई कंपनियों की एडवांस तकनीक वाली मशीनें मिलती हैं जिनकी कीमत 40 हजार रुपये तक होती है।

कंप्यूटर मांझा किसानों के लिए बना वरदान

कंप्यूटर मांझा उन किसान भाइयों के लिए वरदान बन कर सामने आया है जो कई पीढ़ियों से अपने खेत के ऊबड़-खाबड़ होने से परेशान हैं। लागत लगाते-लगाते थक गये हैं कि खेत चौरस होने का नाम ही नहीं ले रहा है। लाखों रुपये ट्रैक्टर वालों को दे चुके हैं। लेकिन खेत में सुधार होने की कोई संभावना दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही है। किसान भाई आप भी यदि ऐसी ही समस्या से परेशान हैं तो ये मशीन आपके लिए बहुत ही अच्छी है। कहीं-कहीं ऐसे भी खेत देखने को मिले हैं कि एक कोने पर पानी न ठहरने की वजह से फसल सूख जाती है तो दूसरे कोने में तालाब बन जाता है और वहां की फसल डूब जाती है। विवश होकर किसान भाइयों को आधे-अधूरे खेत में खेती करनी होती है। ऐसे किसानों के लिए कम्प्यूटर मांझा साक्षात कुबेर का खजाना बनकर सामने आया है। आइये जानते हैं कि कम्प्यूटर मांझा क्या चीज है और कैसे ऊबड़-खाबड़ खेतों की एक-एक इंच जमीन को समतल बना देता है।

कम्प्यूटर मांझा क्या है: -

किसान भाइयों, कम्प्यूटर मांझा के नाम से मशहूर लेजर लैण्ड लेवलर ऐसी मशीन है, जो किसी भी प्रकार के खेत की असमतल जमीन को चौरस यानी समतल बनाती है। यह कम्प्यूटर और लेजर से जुड़ी हुई मशीन ट्रैक्टर के माध्यम से चलाई जाती है। इस मशीन से चाहे जितना खराब खेत हो, बहुत ही अच्छी तरीके से समतल बनाया जाता है। इस मशीन का एक हिस्सा, जिसे लेजर ट्रांसमीटर कहते हैं, उसको खेत के एक कोने में तिपाये के ऊपर लगा दिया जाता है। इस मशीन का दूसरा हिस्सा ट्रैक्टर से जोड़ दिया जाता है और ट्रैक्टर में एक कम्प्यूटर की तरह की मशीन लगा दी जाती है। जिसमें यह तिपाये वाली मशीन लेजर यानी किरणों के माध्यम से कमांड यानी आदेश देता रहता है। ये लेजर ट्रांसमीटर पूरे खेत की निगरानी करके ट्रैक्टर पर लगी मशीन को बताता रहता है कि कहां पर ऊंचा है और कहां पर नीचा है। यानी कहां से मिट्टी निकालनी है और कहां पर डालनी है। छोटे-छोटे गड्ढों और बड़ी-बड़ी खाई को भी इसी तरह भरता रहता है। यह कंप्यूटर सिस्टम तब तक अपना आप काम करता रहता है जब तक खेत पूरी तरह से समतल न हो जाये। काम पूरा हो जाने पर यह मशीन अपने आप ही रुक जाती है।

कम्प्यूटर मांझा में क्या क्या लगा होता है: -

किसान भाइयों आइये जानते हैं क कम्प्यूटर मांझा नाम की इस मशीन में क्या-क्या चीजें होतीं हैं

1.लेजर ट्रांसमीटर: इस मशीन का यह दिमाग होता है, जो पूरा काम दूसरी मशीन से कराता है। यह छोटी सी मशीन होती है जिसे खेत के एक कोने पर तिपाई लगा कर उस पर फिट कर दिया जाता है और इसे बैटरी द्वारा चलाया जाता है। ये खेत के विभिन्न हिस्सों की स्थिति के बारे में ट्रैक्टर पर लगी दूसरी मशीन को लेजर के माध्यम से निर्देश देता रहता है और वो मशीन इसके निर्देशों के अनुसार खेत में काम करती रहती है।

2.ड्रैग स्क्रैपर/बकेट: ट्रैक्टर के पीछे लगा बड़ा सा एक यंत्र होता है, जो खेत में अपने ब्लेड से मिट्टी को काटता है और उसमें 7 फिट लम्बी और 4 फिट गहरी एक जगह बनी होती है जिसमें मिट्टी इकट्ठा होती रहती है और उसे गड्ढे वाली जगह में भरा जाता है। इसे बकेट या बाल्टी भी कहा जाता है।

3.लेजर रिसीवर: ट्रैक्टर के पीछे लगे से बड़े यंत्र पर एक लम्बा सा पाइप लगा होता है, उसके ऊपर एक यंत्र लगा होता है जिसे लेजर रिसीवर कहते हैं। यह लेजर रिसीवर खेत के कोने में लगी मशीन से लेजर प्राप्त करता है।

4.कंट्रोल बॉक्स: ट्रैक्टर में चालक के पास एक छोटा सा कम्प्यूटर की तरह का एक बॉक्स लगा होता है। इसमें लेजर रिसीवर द्वारा मिल रहे संकेतों को दिखाया जाता है। चालक को इस बॉक्स को देखकर यह पता चलता है कि किस तरह के निर्देश मिल रहे हैं और उसे क्या करना है। कब और कहां पर ट्रैक्टर ले जाना है।

5.हाइड्रोलिक सिस्टम: ट्रैक्टर का हाइड्रोलिक सिस्टम का उपयोग उसके पीछे लगी लेवलिंग बकेट को ऊपर-नीचे करनेके लिए किया जाता है।

कम्प्यूटर मांझा की विशेष जानकारी: -

1. किसान भाइयों इस मशीन की टेकनीक के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। खेत के कोने पर लगा लेजर ट्रांसमीटर ट्रैक्टर के पीछे लगे लेजर रिसीवर को 700 मीटर की दूरी तक किरणें भेज सकता है। जिसके आधार पर यह मशीन काम करती है।

2. इस मशीन का दूसरा महत्वपूर्ण हिस्सा है लेजर रिसीवर, जो लेजर ट्रांसमीटर से प्राप्त किरणों को चालक के पास लगे कंट्रोल बॉक्स में इलेक्ट्रिकल सिग्नल यानी बिजली के बटनों को जला-बुझाकर संकेत देता है।

3. कंट्रोल बॉक्स फिर इस मशीन में लगे हाइड्रोलिक सिस्टम को ऊपर-नीचे करने के संकेत देता है। यह एक सेकेंड मे कई बार हाइड्रो. लिक सिस्टम और इन्फ्रारेड बीम को ऊपर-नीचे करने की कार्रवाई करता है।

4. लेजर लेवलिंग मशीन दोहरे ढलान वाले लेजर से काम करती है, उसे ब्लेड जमीन से लगकर अपना काम अच्छी तरह से कराती है। जमीन को इस तरह समतल बना दिया जाता है कि वहां पर पानी न भर सके।

5. लेजर ट्रांसमीटर जरूरत पड़ने पर लेजर बीम को 360 डिग्री यानी गोले के आकार में घुमा कर काम करा सकता है।

6. लेजर रिसीवर सिस्टम बीम को निर्देश देता रहता है जिससे अपने आप ही समतल बनाने का कार्य होता रहता है। लेजर मशीन को दो दिशाओं में चलाया जाता है और चालक को मशीन को छूना भी नहीं पड़ता है और सारा काम हो जाता है।

7. इस मशीन को चलाने के लिए कम से कम 50-55 हार्स पॉवर वाला ट्रैक्टर चाहिये। मशीन को चलाने से पहले की ट्रैक्टर की सर्विस करा लेनी चाहिये अन्यथा मशीन को चलाने में दिक्कत भी आ सकती है।

कम्प्यूटर मांझा के प्रयोग के क्या-क्या लाभ हैं: -

1. कम्प्यूटर मांझा से खेत की जमीन समतल होने से किसान भाइयों को अनेक तरह के लाभ प्राप्त होते हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:- सबसे बड़ा लाभ यह है कि आपकी बेकार जमीन समतल होने के बाद एक अच्छा खेत बन जाता है, खेती का प्रबंधन करके कोई भी अच्छी फसल ली जा सकती है।

2. सिंचाई में जो पानी इधर-उधर बह जाता था या भर जाता था,वो सब बचता है। सिंचाई में पानी भी कम लगता है। इससे किसान भाइयों का समय व पैसा तथा मेहनत बचती है।

3. बीज, खाद, कीटनाशक आदि में भी काफी बचत होती है।

4. खेत की जुताई, बुवाई आदि में किये जाने वाले इंधन के खर्चे में बचत होती है

5. खेत के समतल होने से उसमें नमी बराबर बनी रहती है, जिससे अधिक से अधिक खेती की जा सकती है

6. केवल धान की एकाध किस्म ही पानी में तैयार होती है, बाकी सभी तरह की फसलों के लिए जलनिकासी वाले खेत की जरूरत किसान भाइयों को होती है जो इस लेवलर मशीन से पूरी हो जाती है।

7. जल निकासी की व्यवस्था होने से खेत की मिट्टी भी भुरभुरी हो जाती है जिससे किसी भी उपज की खेती आसानी से की जा सकती है।

8. भूमि के समतल होने से सिंचाई में लगभग 35 प्रतिशत का फायदा होता है।

9. समतल होने से खेती योग्य जमीन का हिस्सा भी बढ़ जाता है, कहने का मतलब बेकार जमीन भी खेती के योग्य बन जाती है।

10. खेती करने मे किसान भाइयों की मेहनत, समय व पैसा की काफी बचत होती है

11. सिंचाई में होने वाला खर्च तो बचता ही है और उचित प्रबंधन से खेतों में पैदावार 50 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।।

सरकारी सब्सिडी का भी है प्रावधान: -

भारत सरकार ने कृषि कार्य को बढ़ावा देने के लिए किसान भाइयों को अनेक सुविधाएं देने की कई योजनाएं बनाई हैं। अधिक पैदावार के लिए कृषि संयंत्रों की खरीद पर सरकार की ओर से सब्सिडी की अनेक योजनायें हैं। प्रत्येक राज्य की सरकार अपने-अपने राज्य के किसानों को कृषि यंत्रों की खरीद पर सब्सिडी देतीं हैं। किसान भाइयों को चाहिये कि वे अपने-अपने राज्य के कृषि विभाग के अधिकारियों से सम्पर्क करके सब्सिडी के बारे में जानकारी प्राप्त करें और उसका लाभ उठायें।

किसान भाई उठा सकते हैं दोहरा लाभ: -

कम्प्यूटर माझा से किसान भाई दोहरा लाभ उठा सकते हैं। पहला कि अपने खेत को समतल बनाकर स्वयं खेती का लाभ उठा सकते हैं। दूसरे कॅम्प्यूटर मांझा को किराये पर भी चलवा सकते हैं। इससे काफी लाभ मिलता है।

लागत व आमदनी: -

कम्प्यूटर मांझा खरीदने में लगभग 3 लाख रुपये की लागत आती है। इसमें सरकार द्वारा अनुदान भी दिया जाता है। किसान भाई इसे खरीद कर इसका उपयोग कर सकते हैं। साथ ही अपने आसपास के क्षेत्रों में इस मशीन को किराये पर चलायेंगे तो काफी लाभ होगा। कई जानकार लोगों का कहना है कि इस मशीन की गर्मियों के मौसम में उस समय अधिक डिमांड होती है, जब सारे खेत खेती कटने के बाद खाली हो जाते हैं। बताया जाता है कि इस मशीन को 700 रुपये प्रति घंटे के हिसाब से चलाया जाता है। एक दिन में यदि 10 से 12 घंटे चली तो 7 से 8 हजार रुपये प्रतिदिन की आमदनी हो सकती है। यदि दो महीने मशीन इसी तरह चली तो लगभग 5 लाख रुपये की आमदनी हो सकती है। यदि इसे कम से कम में भी माना जाये तो दो से ढाई लाख रुपये की आमदनी तो कहीं नहीं गयी है।

18 लाख किसानों से सरकार ने खरीदा धान

धान खरीद में कई तरह की व्यावहारिक दिक्कतों के बाद भी चालू खरीफ सीजन में धान की खरीद की गई है। चंडीगढ़, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू एवं कश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश, केरल, ओडिशा, महाराष्ट्र, बिहार सहित कई राज्यों में अभी भी खरीद जारी है। 30 नवंबर, 2021 तक खरीफ विपणन मौसम 2021-22 में 290.98 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद हो चुकी है। यह खरीद चंडीगढ़, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, पंजाब, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, तेलंगाना, राजस्थान, केरल, तमिलनाडु, बिहार, ओडिशा, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश जैसे राज्योंध्केंद्र शासित प्रदेशों में हुई है। सरकारी विज्ञाप्ति के अनुसार अब तक लगभग 18.17 लाख किसानों को 57,032.03 करोड़ रुपये के न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ मिला है।

मौजूदा खरीफ विपणन मौसम में अधिकतम खरीद पंजाब (18685532 मीट्रिक टन) से हुई है। उसके बाद हरियाणा (5530596 मीट्रिक टन) और उत्तरप्रदेश (1242593 मीट्रक टन) से खरीद हुई है। अन्य राज्यों में भी खरीद जोर पकड़ रही है।

MERIKHETI
Mahindra
YUVO
475DI
29.8 kW (40 HP)
Mahindra YUVO 475DI
YUVO

किसानों के लिए बहुत किफायती हैं
न्यू हॉलैंड के ये ट्रैक्टर
New Holland
3032 35hp 26.09 kW TX
New Holland
3230 42hp 31.31 kW TX
New Holland
3630 Plus SUPER TX

कृषि क्षेत्र को प्रभावित करेगा न्यू कोविड वेरियंट

कोराना के न्यू वेरियंट को लेकर देश में भी सतर्कता की डुगडुगी बजने लगी है। फिलहाल भले ही इसका कोई असर न दिखे लेकिन यह कृषि क्षेत्र को भी अच्छा खासा प्रभावित करेगा। हाल ही में यूरिया जैसे उर्वरक की कमी के पीछे भी इसके असर को कम करके नहीं देखा जा सकता। यदि भविष्य में जरा भी हालात बिगडे तो फसलों की बेकदरी होने से नहीं बच सकती। देश में खाद की कुल जरूरत का आधा हिस्सा अकेला यूरिया का है। बाकी सभी खादों के सापेक्ष देश में सालाना करीब 320 लाख टन यूरिया की खपता होती है। इसमें तकरीबन 60 लाख टन यूरिया विदेशों से आयात किया जाता है।

कोराना के न्यू वेरियंट को लेकर देश में भी सतर्कता की डुगडुगी बजने लगी है। फिलहाल भले ही इसका कोई असर न दिखे लेकिन यह कृषि क्षेत्र को भी अच्छा खासा प्रभावित करेगा। हाल ही में यूरिया जैसे उर्वरक की कमी के पीछे भी इसके असर को कम करके नहीं देखा जा सकता। यदि भविष्य में जरा भी हालात बिगडे तो फसलों की बेकदरी होने से नहीं बच सकती। देश में खाद की कुल जरूरत का आधा हिस्सा अकेला यूरिया का है। बाकी सभी खादों के सापेक्ष देश में सालाना करीब 320 लाख टन यूरिया की खपता होती है। इसमें तकरीबन 60 लाख टन यूरिया विदेशों से आयात किया जाता है।

उर्वरक उपयोग की प्रवृत्ति लागातार बढ़ रही है। किसान इन पर पूरी तरह निर्भर होते जा रहे हैं। जमीन में कंपोस्ट खादों की रिक्तता से खेती में रासायनिक खादों के बैलेंस और फसलों द्वारा उसके अवशोषण में भी गिरावट दर्ज की जा रही है। यानी कार्बनिक खादों के अभाव में रासायनिक खादें जितनी मात्रा में डाली जा रही हैं उनके काफी बड़े अंश का खेती में दुरुपयोग हो रहा है। फसल उन्हें पूरी तरह से ले नहीं पातीं। खादों को पौधों की जड़ों तक पहुंचाने वाले बैक्टीरिया जमीन में लागातार घट रहे है। जमीन रासायनिक खादों की आदी हो गई है और अब किसानों को पर्याप्त खाद भी मिल नहीं पा रही है। इस तरह की प्रतिकूलताओं के बाद भी किसानों को इस बात की चिंता सताने लगी है कि आगामी कोविड न्यू वेरियंट के प्रभाव से उनकी फसलों का बाजार प्रभावित न हो जाए। सरकार को अभी से किसानों की आगामी सीजन की फसलों के उचित मूल्य की दिशा में कमद उठाने होंगे। एक तरफ देश एमएसपी पर गारंटी वाले कानून की बहस में उलझा है दूसरी तरफ किसान कई तरह की दिक्कतों में उलझे हैं। किसानों की उलझन आजादी के प्रारंभ से अभी तक कम नहीं हुई हैं। वह ज्यादातर ऐसी ही रहती हैं। यानी जैसे खेती भगवान भरोसे रहती है वैसे ही किसान भगवान भरोसे हैं।

कृषि कानूनों की वापसी, पांच मांगें भी मंजूर, किसान आंदोलन स्थगित

नई दिल्ली। कृषि कानूनों का विरोध करने वाले किसानों ने एक साल तक दिल्ली सीमा पर आंदोलन करके सरकार को झुकने को मजबूर कर दिया। सरकार जिस जोश में ये कृषि कानून लायी थी, किसानों ने उसी जोश से उनका विरोध किया और एक साल तक लगातार प्रदर्शन करके यह दिखा दिया कि वे किसी भी तरह सरकर के सामने झुकने वाले नहीं हैं।

इसके बाद सरकार ने एक माह में कानून वापस भी ले लिये हैं और किसानों से उनकी पांच प्रमुख मांगों को पूरा करने का वादा भी किया है। इसके बाद किसानों नेअपना आंदोलन स्थगित करके दिल्ली सीमा से अपना डेरा हटाते हुए घरों को लौट गये। घर वापसी पर किसानों का वीरों की भांति पुष्प वर्षा करके स्वागत किया गया। जाते जाते किसानों ने सरकार को यह चेतावनी भी दी है कि यदि जरूरत पड़ी ते वह फिर दिल्ली सीमा पर आकर आंदोलन कर सकते हैं।

कृषि कानून बनते ही शुरू हो गया था विरोध:-

किसानों का आंदोलन सितम्बर 2020 में उस समय शुरू हो गया था जब सरकार ने कृषि कानूनों को संसद से पारित करवा कर और राष्टकृपति से हस्ताक्षर कराकर लागू करने का ऐलान किया था। उसके बाद से लगातार दिल्ली के पंजाब-हरियाणा बार्डर के सिंघू बॉर्डर और शम्भू बॉर्डर पर किसानों डेरा डालकरअपना प्रदर्शन शुरू कर दिया था वहीं उत्तर प्रदेश की ओर से गाजीपुर बॉर्डर से भाकियू सहित अनेक किसान संगठनों ने आंदोलन शुरू कर दिया था। 26 जनवरी के दिल्ली के लालकिला पर जोरदार प्रदर्शन के बाद आंदोलन की धार कुंद पड़ गयी थी और आंदोलन समाप्ति की ओर चल दिया था।

राकेश टिकैत के आंसुओं ने आंदोलन में जान फूंक दी:-

उसी समय उत्तर प्रदेश सरकार के आदेश से गाजियाबाद जिला प्रशासन ने जब गाजीपुर बॉर्डर से आंदोलनकारी किसानों को हटाने का प्रयास किया तो भाकियू के राष्टकृीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने आंसू बहाकर आंदोलन को नये सिरे से खड़ा कर दिया। राकेश टिकैत को किसानों का भावनात्मक समर्थन मिलने के बाद सरकार का पक्ष कमजोर हो गया।

सरकार की सारी कोशिशें रहीं नाकाम:-

इस दरम्यन सरकार ने किसानों को कृषि कानूनों की अच्छाइयों का प्रचार करना जारी रखा और लोगों को खूब समझाने की कोशिश की। इस बीच आंदोलनकारी किसानों ने स्पष्ट कर दिया कि वे कृषि कानूनों की वापसी से कम पर कोई बात नहीं मानेंगे। इस दौरान सरकार की ओर से किसानों को मनाने के लिए कई दौर की वार्ताएं हुई लेकिन कोई बात नहीं बनी।

सरकार और किसानों के बीच शुरू हुई चुनावी जंग:-

इसके बाद किसानों और सरकार के बीच चुनावी जंग शुरू हो गयी। कई राज्यों में भाजपा की चुनावी हार के बाद सरकार को समझ में आया कि किसानों से तकरार से कोई फायदा नहीं होने वाला बल्कि नुकसान बढ़ने वाला है।

सियासी नुकसान देख सरकार को झुकना पड़ :-

जब उत्तर प्रदेश सहित पांच राज्यों की विधानसभा चुनाव की तैयारियां शुरू होने लगी तो सरकार को अपनी ही पार्टी की संभावित हार नजर आने लगी तब सरकार ने मंथन करके गुरुनानक जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्टकृ को संबोधित करते हुए कृषि कानूनों की वापसी का ऐलान किया। लेकिन किसान संगठनों ने उनकी इस बात पर विश्वास नहीं किया बल्कि कहा कि जब तक सरकार कानून वापस नहीं ले लेती तबतक आंदोलन जारी रखा जायेगा।

जितनी तेजी से कानून बने थे, उतनी तेजी से कानून वापस भी लिये गये:-

इसके बाद संसद के शीतकालीन सत्र में सरकार ने तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने की प्रक्रिया पूरी की और राष्टकृपति की मुहर लगने के बाद जब ये कानून वापस हो गये तो किसान संगठनों के तेवर ढीले पड़ गये और उसके बाद भी वो आंदोलन वापस लेने को तैयार नही हुए और अपनी पांच प्रमुख मांगों पर सरकार से लिखित आश्वासन देने की मांग उठा दी।

सरकार को पांच मांगें भी माननी पड़ीं:-

सरकार की ओर से जब किसान संगठनों के संयुक्त किसानमोचा को लिखित रूप से किसानों की सभी पांचों प्रमुख मांगों को स्वीकार करने का लिखित आश्वासन दिया तब आंदोलनकारी किसानों ने शनिवार यानी 11 दिसम्बर से सिंघू बार्डर से अपने तम्बू हटाये और अपने घर की वापसी की। उसके बाद गाजीपुर बॉर्डर से भी तम्बू हटे और अब वहां से आंदोलनकारी किसान अपने घरों को लौट गये हैं।

किसानों ने 15 जनवरी तक का दिया है अल्टीमेटम :-

संयुक्त किसान मोर्चा के नेताओं ने कहा कि आगामी 15 जनवरी को किसानों की बैठक होगी जिसमें समीक्षा की जायेगी कि सरकर ने यदि लिखित आश्वासन के बाद वादा पूर नहीं किया तो फिर आंदोलन करेंगे।

किसानों का फूलों की वर्षा करके किया स्वागत :-

गाजीपुर बॉर्डर से पश्चिमी उत्तरप्रदेश स्थित अपने घरों की वापसी के समय भाकियू नेता राकेश टिकैत सहित किसानों का फूलों की वर्षा करके स्वागत किय गया। पंजाब और हरियाणा के किसानों की घर वापसी के समय एक एनआरआई ने विमान को किराये पर लेकर उससे पुष्प वर्षा कर किसानों क स्वागत किया।

वापसी से पहले किसानों ने अरदास की और मिठाई बांटी:-

आंदोलन को स्थगित करने के ऐलान के साथ ही किसानों ने शंभु बॉर्डर, सिंघू बॉर्डर और गाजीपुर बॉर्डर से अपने तम्बू हटाये उससे पहले अरदास की उसके बाद अपना डेरा समेट कर घरवापसी की। आंदोलन में अपनी जीत मानने वाले किसानों ने घर वापसी के दौरान मिठाई बांट कर जीत का जश्न मनाया।।

वे कौन सी मांगें माननें के बाद किसान घरों को लौटे:-

किसान नेताओं ने यह जानकारी देते हुए बताया कि केन्द्र सरकार की ओर से कृषि सचिव संजय अग्रवाल के हस्ताक्षर वाली एक चिटठी मिली है। इस चिटठी में यह बताया गया है कि सरकार ने किसान संगठनों की पांच प्रमुख मांगों पर अपनी सहमति जताई है। ये मांगे इस प्रकार हैं:-

1. एमएसपी के बारे में केन्द्र सरकार ने आश्वासन दिया है कि वह इस मुद्दे पर एक किसान कमेटी बनाएगी, जिसमें संयुक्त किसानमोर्चा के प्रतिनिधिलिये जायेंगे, जिन फसलों पर एमएसपी मिल रहा है वो जारी रहेगा। किसानों के मुकदमें होंगे वापस, इस मुद्दे पर यूपी, उत्तरखंड और हरियाणा की सरकार ने

2. किसानों पर दर्ज मुकदमों को वापस लिये जाने पर सहमति जताई है। इसके अलावा दिल्ली, रेलवे और अन्य प्रदेश भी किसानों पर दर्ज मुकदमें वापस लेंगे।

3. यूपी और हरियाणा सरकार में भी इस बात पर सहमति बन गयी है कि जिस प्रकार पंजाब किसानों को पांच लाख रुपये का मुआवजा देती है उसी प्रकार इन दोनों राज्यों की सरकार भी मुआवजा देंगी।

4. किसानों के बिजली के बिल पर भी विचार किया जायेगा। किसानों को प्रभावित करने वाले प्रावधानों पर पहले सभी पक्षों के साथ चर्चा की जायेगी और उसके बाद किसान मोचा से वार्ता करके ही संसद में बिल पेश किया जायेगा।

5. पराली को जलाने के मामले में केन्द्र सरकार ने जो कानून पारित किये हैं, उसकी धारा 14 और 15 में आपराधिक जिम्मेदारी से किसानों को मुक्त किया जायेगा।

किसानों की जीत के मायने:-

किसानों ने अपनी मांगें मनवा कर कृषि कानून मुद्दे पर जीत दर्ज कर ली है। किसानों ने एक तरह से देश के समक्ष यह उदाहरण पेश किया है कि सरकार से बड़ी जनता की ताकत होती है। सरकार किसी तरह के कानून जनता पर थोप नहीं सकती बल्कि जनता चाहे तो सरकार को झुकने को मजबूर कर सकती है।

जो किसान चाहें कम लागत में अच्छी कमाई, ऐलोवेरा की खेती में है भलाई

किसान भाइयों यदि आप अपनी थोड़ी खराब भूमि या बाग बगीचे में कम लागत करके अच्छी कमाई करना चाहते हों तो आज के समय में ऐलोवेरा यानी घीग्वार अथवा घृतकुमारी की खेती से अच्छी और कोई खेती नहीं है। अब तक इसके खेत की मेड़ पर उगने वाली घास या जानवरों से बचाने के लिए मेड़ों में उगाया जाता था लेकिन जब से योगा और आयुर्वेदिक दवाओं का प्रचार प्रसार बढ़ा है तब से ऐलोवेरा को आयुर्वेदिक व कॉस्मेटिक दवाओं के कच्चे पदार्थ के रूप में पहचाना गया है। इसके बाद तो इसकी मांग पूरे विश्व में इतनी अधिक बढ़ गयी है कि अब इसकी भी परम्परागत तरीके से खेती की जाने लगी है।अब तो आयुर्वेदिक और कॉस्मेटिक कंपनियों अपनी मनचाही फसल के लिए किसानों से खेती के लिस कान्ट्रेक्ट करतीं हैं। इससे किसानों को फसल बेचने के लिए परेशान नहीं होना पड़ता है। साथ ही किसानों को अच्छी खासी आमदनी होती है।

हर मर्ज की दवा में उपयोग होता है ऐलावेरा: -

ऐलोवेरा अब व्यवसायिक या नकदी फसल बन गयी है। ऐलोवेरा को आयुर्वेद में संजीवनी का पौधा कहा जाता है। ऐलोवेरा का उपयोग मनुष्य के सिर से लेकर पांव तक होने वाली छोटी-बड़ी सभी बीमारियों के उपचार में बनने वाली दवाइयों में होता है। मिनरल्स, विटामिन्स से युक्त ऐलोवेरा को पौष्टिक आहार के रूप में किया जा सकता है। इससे कमजोरी दूर होती है। कोरोना में इम्युनिटी बढ़ाने के लिए खूब इस्तेमाल किया गया है। बवासीर, मधुमेह, गर्भाशय रोगों, पेट के सभी रोगों, जोड़ों की बीमारियों, मुंहासे, रूखी त्वचा, धूप से झुलसी हुई त्वचा, झुर्रियों , चेहरे के दाग-धब्बों, आंखों के काले घेरों, फटी एड़ियों, जलने-कटने, अंदरूनी चोटों, हृदय रोग, ब्रेस्ट कैंसर, आंतों की सूजन, बालों को सुंदर बनाने, वजन घटाने, चर्मरोग, सहित अनेक रोगों में लाभकारी होने के कारण आयुर्वेदिक कंपनियां और कास्मेटिक प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनियां इसकी सबसे बड़ी ग्राहक हैं। वर्तमान समय में जितनी इसकी मांग है उतना उत्पादन नहीं हो पा रहा है। इसलिये किसान भाइयों इस समय इसकी खेती करना बहुत ही फायदेमंद सौदा है।

ऐलोवेरा से क्या-क्या बनता है: -

ऐलोवेरा के जूस को तो सारी दुनिया जानती है लेकिन इससे हेयर स्पा, जेल, बॉडी लोशन, शैंम्पू, स्किन जैल, ब्यूटी क्रीम, हेयर जैल, फेशियल फोम, बनता है। इसके अलावा अनेक आयुर्वेदिक दवाओं में भी इसका उपयोग किया जाता है। साथ ही लोग हरे पौधे से गूदा निकाल कर सीधे भी इस्तेमाल करके अनेक बीमारियों का घरेलू उपचार भी कर लेते हैं। इसका प्रयोग करके मच्छर से भी बचाव किया जा सकता है।

खेती कैसे की जाती है: -

इस चमत्कारिक पौधे की खेती के बारे में जानते हैं कि किस प्रकार और कब इसकी खेती की जा सकती है। इसकी खेती की खास बात यह है कि एक बार बुआई करने के बाद आप लगातार तीन साल तक फसलों की कटाई कर सकते हैं। साल में कम से कम दो बार फसल की कटाई होती है। इससे किसानों को कम लागत में अधिक लाभ होता है।

खेती कैसे की जाती है: -

इस चमत्कारिक पौधे की खेती के बारे में जानते हैं कि किस प्रकार और कब इसकी खेती की जा सकती है। इसकी खेती की खास बात यह है कि एक बार बुआई करने के बाद आप लगातार तीन साल तक फसलों की कटाई कर सकते हैं। साल में कम से कम दो बार फसल की कटाई होती है। इससे किसानों को कम लागत में अधिक लाभ होता है।

खास लाभ: -

1. किसान भाई अपनी परती की भूमि व असिंचित भूमि में भी अतिरिक्त खर्चा किये बिना इसकी खेती कर सकते हैं
2. इसकी खेती के लिए खाद, कीटनाशक व सिंचाई की विशेष आवश्यकता नहीं होती है
3. ऐलोवेरा को कोई जानवर नहीं खाता है। इसलिये इसकी रखवाली की भी जरूरत नहीं होती है।
4. पहले साल की अपेक्षा दूसरे व तीसरे साल में उत्पादन काफी बढ़ जाता है और उससे किसान भाइयों की आमदनी अधिक होती है।
5. जो किसान भाई इस की खेती के बाद व्यवसाय करना चाहें तो वे जूस और पाउडर का प्लांट लगाकर अच्छी खासी कमाई कर सकते हैं।

मिट्टी व जलवायु: -

वैसे तो ऐलोवेरा की खेती किसी भी भूमि में की जा सकती है, केवल जलभराव से इसकी फसल को नुकसान होता है। वैसे इसकी फसल के लिए काली उपजाऊ मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। लेकिन पहाड़ी, बलुई दोमट, दोमट बलुई मिट्टी में भी इसकी फसल ली जा सकती है। पीएच मान 6 से लेकर 9 तक वाली मृदा में भी ऐलोवेरा की खेती की जा सकती है। कम उपजाऊ वाली भूमि पर भी ऐलोवेरा की खेती आसानी से की जा सकती है। ऐलोवेरा यानी ग्वार पाठा के लिए शुष्क व उष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। इसकी खेती आमतौर पर शुष्क क्षेत्र में न्यूनतम वर्षा में की जाती है। अत्यधिक ठंड इस पौधे को को नुकसान पहुंचा सकता है।

खेत की तैयारी कैसे करें: -

पहली बार गहरी जुताई करके खेत को खुला छोड़ देना चाहिये। इसके बाद प्रति हेक्टेयर 10 से 15 टन सड़ी गोबर की खाद डाल देना चाहिये। इसके अलावा जो किसान भाई इसकी उन्नत खेती करना चाहते हों तो वे इसके साथ 120 किग्रा यूरिया 150 किग्रा फास्फोरस व 33 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर इसी समय डाल दें और उसके बाद एक और जुताई कर दें। इसके बाद आपका खेत बुआई के लिए तैयार हो जायेगा।

कब और कैसे करें बुआई या रोपाई: -

जुताई और पाटा लगाने के बाद समतल खेत में क्यारी बनायें मेड़ बनाकर 50-50 सेमी की दूरी पर उसमें पौधों को रोपित करें। वैसे निराई गुड़ाई करने की सुविधा चाहते हों तो दो लाइनों के बीच एक मीटर की जगह छोड़ देनी चाहिये। यदि आप सघन खेती करते हैं तो प्रत्येक हेक्टेयर में 45 हजार से 50 हजार तक पौधे लगाये जा सकते हैं। ऐलोवेरा की खेती के लिए जुलाई के अंतिम सप्ताह से अगस्त माह में करना सबसे उपयुक्त समय होता है। वैसे जलवायु और मिट्टी की विभिन्नता में इसकी फसल अलग-अलग जगह अलग-अलग समय में इसकी बुआई की जा सकती है।

सिंचाई प्रबंधन कैसे करें: -

एलोवेरा के पौधों की रोपाई करने के बाद पानी देना अच्छा रहता है। इसकी खेती में अधिक पानी की आवश्यकता नही होती है। साल भर तीन या चार बार सिंचाई करना ही पर्याप्त होता है। इसकी खेती में यदि ड्रिप या स्प्रिकलर से सिंचाई की जाये तो अधिक फायदा होता है। छिड़काव वाली सिंचाई से इसकी पत्तियों में जेल का उत्पादन अधिक हो सकता है और उसकी क्वालिटी भी अच्छी होती है।

खाद प्रबंधन: -

ग्वार पाठा की खेती में खाद का प्रयोग बुआई से पहले ही गोबर की खाद और उर्वरकों का किया जाता है। उसके बाद किसान भाई चाहें तो अधिक लाभ लेने के लिए नाइट्रोजन का छिड़काव साल में तीन बार कर सकते हैं।

रोग व कीट प्रबंधन: -

1. ऐलोवेरा की खेती में कीट और रोग बहुत कम लगते देखे गये हैं।कभी-कभी पत्तियों और तनों के सड़ने वाली एवं धब्बों वाली बीमारियों का प्रकोप देखा जाता है। इस बीमारी का पता लगने पर मैंकोजेब, डाइथेन एम-45 और रिडोमिल को दो से ढाई ग्राम प्रति लीटर पानी में मिला कर छिड़काव करें अवश्य ही लाभ मिलेगा।
2. ऐलोवेरा के पौधों को बीमारी से बचाने के लिए उसकी जड़ों में मिट्टी हमेशा चढ़ाते रहना चाहिये और खेत को सूखने नहीं दिया जाना चाहिये।
3. बरसात में इसकी खेती की विशेष देखभाल करने की जरूरत है। खेत में पानी भरने पर उसको निकालने का तत्काल प्रबंध करना चाहिये। ऐसा नहीं करने पर जड़ में काला चिकना पदार्थ लगन से पौधा गलने लगता है।

फसल की कटाई: -

पौधे की रोपाई के बाद पहली कटाई आठ से दस महीने के बीच की जा सकती है। पौधे की ऊपरी एवं नई पत्तियों की जगह निचली व पुरानी पत्तियों को पहले काटना चाहिये। इसके डेढ माह बाद फिर से कटाई की जा सकती है। इस प्रकार एक खेत में एक बार की बुआई के बाद तीन साल तक आठ से बारह बार कटाई की जा सकती है। पहली कटाई में 50 से 60 टन प्रति हेक्टेयर ताजी पत्तियां मिलती है। दूसरे साल में 15 से 20 प्रतिशत अधिक पत्तियां मिलतीं हैं और तीसरे साल में भी इसी प्रकार अधिक पत्तियां मिलतीं हैं। किसान भाई चौथे साल भी फसल का लाभ ले सकते हैं लेकिन तीसरे साल से 20 प्रतिशत फसल कम मिलेगी। इसलिये अधिकतर किसान भाई तीन साल के बाद नयी खेती करते हैं।

कटाई के बाद प्रबंधन व प्रसंस्करण: -

खेतों से निकाली गई पत्तियों की सफाई करनी पड़ती है। उसे स्वच्छ पानी से धोना चाहिये। पत्तियों के निचले सिरे को काट कर साफ कर लेना चाहिये। उसके बाद इसे कटी फसल को कुछ समय के लिए यूं ही खुला छोड़ दें त पील रंग का गाढा रस निकलता है। इस रस को इकट्ठा करके वाष्पीकरण विधि से उबाल कर घन रस क्रिया से सुखा लेते हैं। इस सूखे हुए पदार्थ को मुसब्बर, अदनी, बारवेडोज एलोज आदि नाम से विश्व की मार्केट में बेचा जाता है। इससे किसानों का अधिक लाभ मिल सकता है। इससे किसान भाइयों को प्रति हेक्टेयर 8 लाख रुपये की आमदनी हो सकती है। यदि किसान भाई चाहें तो उनकी पत्तियां भी सीधे बाजार में बेची जा सकतीं हैं। उससे कम लाभ होगा फिर भी प्रति हेक्टेयर 3 से 5 लाख रुपये तक की आमदनी हो सकती है।

व्यापार भी है संभव: -

ऐलोवेरा की खेती करने वाले किसान भाई यदि अधिक आय चाहते हैं तो उन्हें इसका जूस व पाउडर बनाने का प्लांट लगाना चाहिये। इस तरह के प्लांट लगाने के लिए सरकारों से आर्थिक मदद लोन व सब्सिडी के रूप में मिल सकती है। इससे किसानों की आय बहुत अधिक बढ़ सकती है।

जनवरी माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

आलेख
डॉ.उदयभान सिंह
अधिश्ठाता कृषि महाविद्यालय
कुम्हेरभरतपुर

जनवरी माह में उद्यानिकी कार्य: -

फल: -

1.आम के थांवलों की निराई-गुडाई करें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। यदि गत माह पौधों में खाद-उर्वरक नहीं दिया गया हो तो आम के पौधों में पौधे की उम्र के हिसाब से प्रथम,द्वितीय,तृतीय,चतुर्थ, व पंचम, तथा पाँच वर्ष से अधिक के पौधों में क्रमशः 15,30,45,60, 75 किग्रा. गोबर की खाद और 0.25,0.50,0.75,1.00 किग्रा. सुपर फास्फेट एवं चतुर्थ वर्ष में 0.25 किग्रा. व पाँच व अधिक उम्र के पौधों में 0.50 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौंधा देवें व सिंचाई करें।

2. अनार के बीजू पौधे तैयार करने हेतु बीज संग्रहण के लिये मातृ वृक्षों का चयन करें।

3. बेर आंवला व अमरुद के बीज पौधे (मूल वृन्त) तैयार करने हेतु बीज व्यवस्था करें। पपीता में प्रति पौधा 35 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम सुपर फास्फेट तथा 75 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश देवें तथा सिंचाई करें।

4. अंगूर की परलेट किस्म में एक वर्ष पुरानी तृतीय शाखाओं पर लगभग 60 प्रतिशत केन पर कलिकाओं की संख्या 4-5 तथा थाम्पसन सीडलेस में 5-8 रखकर तथा शेष 40 प्रतिशत केन पर 2 कलिका रखकर कृन्तन करें। अंतिम कलिका से आधा इंच छोडकर केन काटनी चाहिए। कमजोर , सूखी व रोगग्रस्त शाखाओं को काट देवें। कटाई, छंटाई, करते समय तने की उखडी हुई छाल को हटाकर ताम्रयुक्त फंफूद नाशक का लेप लगा देवें। कटाई छटाई के बाद खाद एवं उर्वरक देकर सिंचाई करें।

सब्जियाँ : -

1.आलू की पछेती फसल में 60-75 किग्रा. नत्रजन प्रति हैक्टर देकर सिंचाई करें।

2. खरीफ प्याज के लिये गंठी तैयार करने हेतु बीज बोये। एक हैक्टर के लिये 10 किग्रा. बीज पर्याप्त होता है। रबी प्याज की रोपाई करें।

3. टमाटर की पौध की रोपाई करें। देशी किस्मों हेतु 150 क्विं. गोबर की खाद, 60 किग्रा. नत्रजन , 80 किग्रा. फास्फोरस व 60 किग्रा पोटाश तथा संकर किस्मों में 250-300 क्विं गोबर की खाद, 180 किग्रा नत्रजन, 120 किग्रा. फास्फोरस तथा 80 किग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर देवें।

4.कुष्माण्ड कुल की ग्रीष्मकालीन सब्जियों हेतु खेत की तैयारी करें। इनके लिये 200-250 क्विं गोबर की खाद, 80-100 किग्रा. नत्रजन 40 किग्रा फास्फोरस व 40 किग्रा पोटाश प्रति हैक्टर की दर से देवें। लौकी व कद्दू के बीजों की बुवाई हेतु 3 मी. दूरी पर तथा अन्य कुष्माण्ड कुल की सब्जियों हेतु 2 मी. दूरी पर आधा मीटर चौडी नालियाँ बनावें।

क्र.सं.	फसल	बीज दर (किग्रा./है.)	उन्नत किस्में
1.	लौकी	4-5	पूसा समर प्रोलीफिक लौंग, पूसा मंजरी, पूसा नवीन, अर्का बहार, पूसा समर, प्रोलीफिक राउण्ड, पूसा मेधदूत, काशी गंगा, पंजाब कोमल, पंजाब लौंग, थार समृद्धि
2.	तुरई	4-5	पूसा चिकनी, पूसा नसदार, अर्का सुमीत,अर्का सुजात पूसा नूतन, पंजाब सदाबहार, पूसा स्नेहा
3.	टिण्डा	4-5	बीकानेरी ग्रीन, अर्का टिण्डा
4.	करेला	4-5	अर्का हरित, कोयम्बटूर लौंग,पूसा विशेष, पूसा औषधि, काशी उर्वशी
5.	खीरा	2-2.5	अर्का हरित, कोयम्बटूर लौंग,पूसा विशेष, पूसा औषधि, काशी उर्वशी

6.	कद्दू	4-5	पूसा विश्वास, अर्का चंदन, पूसा विकास, काशी हरित, कोयम्बटूर-1
7.	ककडी	2-2.5	अर्का शीतल, लखनऊ अगेती, पंजाब लौंगमेलन-1
8.	तरबूज	4-5	बीकानेरी ग्रीन, अर्का टिण्डा
9.	खरबूजा	1.5-2	दुर्गापुरा मधु, पंजाब हाइब्रिड, हिसार मधुर, पंजाब सुनहरी, पंजाब हाइब्रिड, पूसा रसराज, काशी मधु, पूसा शर्बती

5.सौंफ में फूल आते समय 30 किग्रा. नत्रजन प्रति हैक्टर देकर सिंचाई करें। दें।

फूल : -

1. गुलाब की कटाई-छंटाई करें। रोगग्रस्त व सूखी टहनियाँ भी हटा देवें।
2. कलमों द्वारा गुलाब के पौधे तैयार करें। कलमों को रुटेक्स अथवा सिरेडेक्स पाउडर से उपचारित कर लें।
3. वार्षिक गुलदाउदी की पौध की खेत में रोपाई करें।

अन्य : -

फलदार पौधे व सब्जियों का पाले से बचाव करें।

उपाय :-

1. उत्तर-पष्चिम दिशा में वायुरोधी पौधे लगायें।
2. छोटे पौधों में ***उत्तर-पश्चिम*** दिशा में टाटी लगायें।
3. हल्की सिंचाई करें।
4. धूँआ करें।
5. व्यापारिक सल्फ्यूरिक अम्ल के 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।
6. रेडियो, टी.वी. से भीतलहर की जानकारी लेते रहें।

फल कीट एवं उनका नियंत्रण :-

1. अमरुद की मिलीबग - टहनियों व पंखाडियों में चिपककर रस चूसती हैं। डाईमिथोएट 30 ई.सी. 1 मिलीलीटर पानी के घोल में छिडकाव करें।
2. नींबू व पपीता का मूल ग्रन्थी रोग - पत्तियों पीली पड जाती हैं। टहनियाँ सूख जाती हैं। कारबोफ्यूरान 3 जी 8-10 ग्राम प्रति पेड की दर से प्रयोग करें।
3.पपीता का हरा तेला - पत्तियों का रस चूसकर नुकसान पंहुचाता हैं। इमीडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल 0.3 मिलीलीटर प्रतिलीटर पानी का घोल बनाकर छिडकाव करें।
4.अमरुद का छाल भक्षक कीट-वृक्ष की छाल खाते है व डाली में सुरंग बनाते हैं। नर्सरी तथा बगीचों में क्लोरोपाइरीफॉस अथवा क्यूनॉलफॉस 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।
5.अनार की मिलीबग - कोमल टहनियों व फूलों से रस चूसती हैं। मैलाथियोन 50 ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी का छिडकाव करें।

सब्जी कीट नियंत्रण :-

1. बैंगन,टमाटर, व मिर्च में मकडी, थ्रिप्स सफेद मक्खी - पत्तियों व तनो से रस चूसते हैं। मिथाइल डिमेटोन 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।
2. बैंगन का फल व तना छेदक - शाखाये मुरझाकर नष्ट हो जाती है। फल काणे होकर सडते है। मेलाथियोन 50 ई.सी. 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।
3. टमाटर का पत्ती भक्षक कीट व फल छेदक कीट - फलों व पत्तियों को खाकर नुकसान पहुँचाते हैं। मेलाथियोन 50 ई.सी. 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।

फल रोग एवं नियंत्रण :-

1. आम का मालफॉरमेशन - पत्तियॉ गुच्छों में परिवर्तित हो जाती हैं। प्लेनोफिक्स 1 मिलीलीटर या बाविस्टीन 1 ग्राम एवं डाईजीनान 1 मिलीलीटर प्रतिलीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करें।

2. नीबू में साइटस कैंकर - टहनियों, पत्तियों व फलों पर भूरे उठे हुये धब्बे बनते है। बोरडेक्स मिश्रण (5:5:50) या स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 250 मि.ग्रा. व बाविस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें।

3. आम का ब्लेक टिप रोग - फलों के शीर्ष पर काले धब्बे बनते हैं। बोरेक्स 5 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें।

4.पपीता का विभाणु रोग - पत्तियॉ छोटी कुंचित व विकृत हो जाती हैं। फास्फोमिडान 85 एस.एल आधा मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिडकाव करें।

5.पपीता का तना गलन रोग - भूमि की सतह से तना सडना प्रारम्भ हो जाता हैं। पानी का निकास ठीक करें या केप्टान 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या (6:6:60) बोर्डो मिश्रण का छिडकाव करें।

सब्जियों के रोग व नियंत्रण :-

1. बैंगन में छोटी पत्ती रोग - यह रोग माइको प्लाज्मा जनित है। पत्तियॉ छोटी व गुच्छो में परिवर्तित हो जाती है। मेलाथियोन 50 ई.सी. 0.1 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।

2. बैंगन, टमाटर, मिर्च कुष्माण्ड कुल की सब्जियॉ व पत्ती वाली सब्जियों में झुलसा रोग - पत्तियो पर गीरे भूरे धब्बे बन जाते हैं। मेंकोजेब 0.2 प्रतिशत घोल का छिडकाव करें।

3. टमाटर, बैंगन व मिर्च में पर्णकुंचन व मोजेक - पत्ते सिकुड जाते है, झुर्रियां पड जाती है, हरे पीले रंग के धब्बे दिखाई देते है। इमीडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें।

4.मिर्च में जीवाणु पत्ती धब्बा रोग - पत्तियॉ पर छोटे-छोटे उठे हुये भूरे धब्बे दिखाई देते है। स्ट्रेप्टो साइक्लीन 200 मि.ग्रा. व बविस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिडकाव करें।

पेश है नया
POWERTRAC
434
DS Super Saver
ज़्यादा पावर, ज़्यादा बचत
हर काम करे फटाफट
25 kW
(34 HP)
नं. 1
किफ़ायती
*नियम व शर्तें लागू।

किसानों के लिए बहुत किफायती हैं
न्यू हॉलैंड के ये ट्रैक्टर
New Holland
3032 35hp 26.09 kW TX
New Holland
3230 42hp 31.31 kW TX
New Holland
3630 SUPER Plus TX